परमपिता शिव परमात्मा
गीता-ज्ञान-दाता

ज्ञानामृत

वर्ष 48, अंक 9, मार्च, , 2013 (मासिक)
मूल्य 7.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 90 रुपये

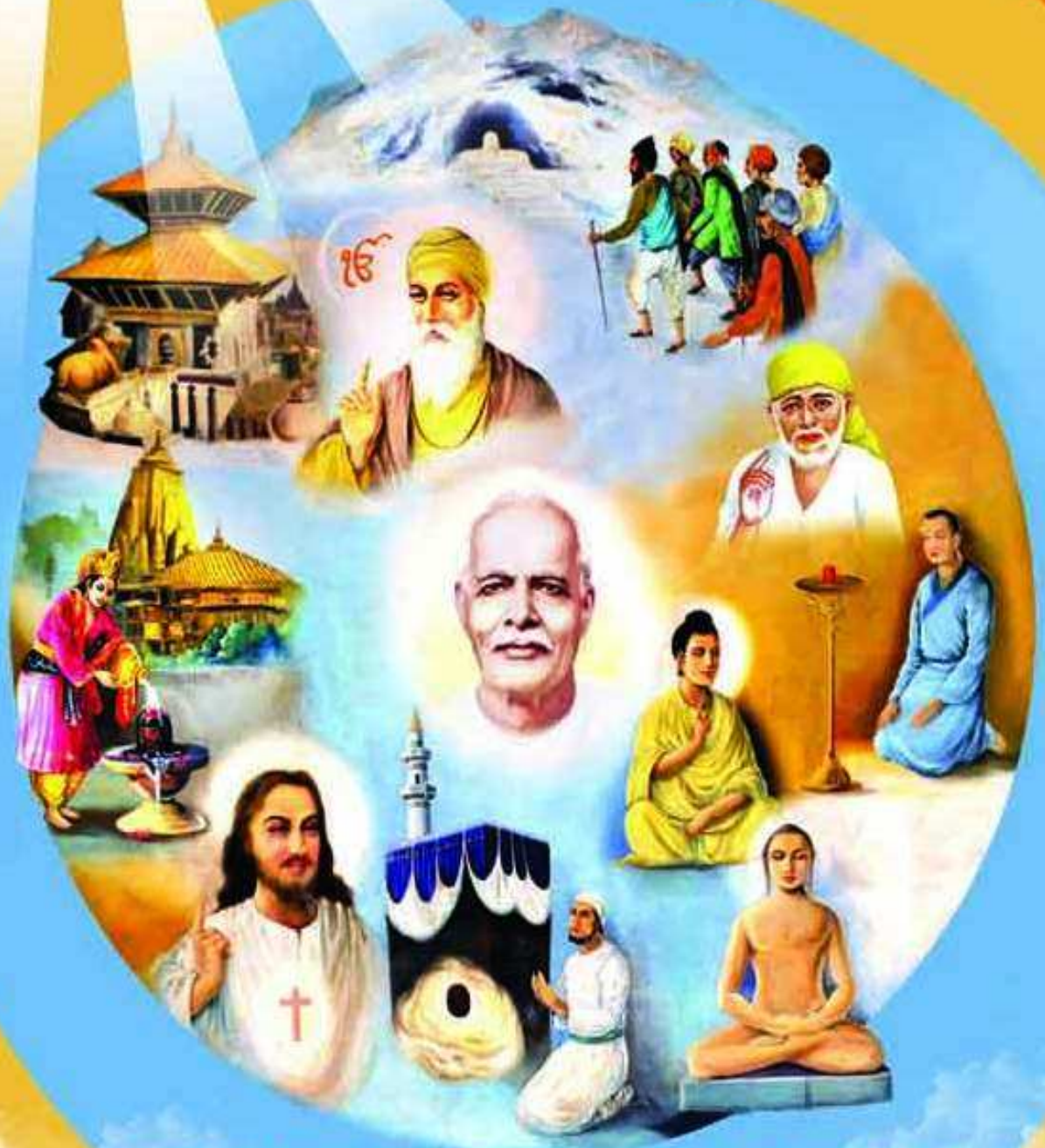

परमात्मा शिव सर्व आत्माओं के परमपिता है। प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर वे पिछले 77 वर्षों से विश्व नवनिर्माण का कर्त्तव्य कर रहे हैं। शिव अवतरण की 77वीं जयन्ती की आप सबको कोटि-कोटि बधाइयाँ

1.**रायपुर**- न्यायविद् सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित परिचर्चा का उद्घाटन करते हुए छ.ग. के प्रमुख लोकायुक्त न्यायमूर्ति लालचन्द भादू, न्यायमूर्ति वी.ईश्वरैय्या, ब्र.कु. कमला बहन तथा अन्य। 2.**ओ.आर.सी. (गुड़गाँव)**- पंजाब-हरियाणा उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भ्राता अर्जन कुमार सिकरी को ईश्वरीय संदेश देती हुई ब्र.कु. रजना बहन। 3.**मुम्बई (मलाड)**- स्पोर्टस फियस्टा प्राइज डिस्ट्रीब्यूशन समारोह में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री भ्राता पृथ्वीराज चव्हाण से ज्ञान-चर्चा करती हुई ब्र.कु. कुन्ती बहन। 4.**नेपालगंज**- 'परमात्म शक्ति द्वारा स्वर्णिम संसार' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए प्रज्ञा प्रतिष्ठान के कुलपति भ्राता तिल विक्रम नेम्वाग, ब्र.कु. सुरेन्द्र बहन, ब्र.कु. मोहन सिघल, ब्र.कु. ऊषा बहन तथा अन्य। 5.**मुम्बई (बोरिवली)**- सड़क सुरक्षा सप्ताह कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए फिल्म कलाकार बहन पूजा बेदी, भ्राता राजा बुन्देला, ब्र.कु. दिव्या बहन तथा अन्य। 6.**जमखंडी**- कर्नाटक के उप-मुख्यमंत्री भ्राता के.एस.ईश्वरप्पा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. मीरा बहन। 7.**आगरा (म्यूज़ियम)**- पर्यटन अभियान- लिफ्टिंग हार्ट कार्यक्रम में संबोधित करते हुए ब्र.कु. बिमला बहन। मंचासीन है उ.प्र. के उद्योगमंत्री भ्राता शिवकुमार बेरिया, ब्र.कु. कमलेश बहन तथा अन्य। 8.**कोलकाता**- आध्यात्मिक कार्यक्रम के बाद ब्र.कु. कानन बहन, ब्र.कु. शिवानी बहन, बी.के. सरला बिड़ला, भ्राता सुरेश ओबेराय तथा अन्य ईश्वरीय स्मृति में।

संजय की कलम से ..

होली का आध्यात्मिक रहस्य

होली का त्योहार शिवरात्रि के बाद, फाल्गुन पूर्णिमा के दिन आता है और लोग इसे प्राय: चार प्रकार से मनाते हैं, 1. एक-दूसरे पर रंग डालते हैं, 2. अन्तिम दिन होलिका जलाते हैं, 3. मंगल मिलन मनाते हैं और 4. कई लोग झूले में श्रीकृष्ण (श्री नारायण) की झांकी भी सजाते हैं। होली को मनाने की तिथि और उपर्युक्त चार रीतियों पर ध्यान देने से होली के वास्तविक रहस्यों को सहज ही समझा जा सकता है।

भारत में, देशी वर्ष फाल्गुन की पूर्णमासी को समाप्त होता है। इसलिए, फाल्गुन की पूर्णमासी की रात्रि को होलिका जलाने का अर्थ पिछले वर्ष की कटु और तीखी स्मृतियों को जलाना और अपने दु:खों को जलाना, अपने दु:खों को भूलना और हँसते-खेलते नए वर्ष का आह्वान करना है। उत्तर प्रदेश में कई लोग 'होलिका दहन' को 'संवत जलाना' भी कहते हैं। इसके अतिरिक्त, पुराने वर्ष के अन्त में इस त्योहार का मनाया जाना वृहद् दृष्टि में इस रहस्य का भी परिचय देता है कि यह त्योहार पहले-पहले कल्प अथवा कलियुग के अन्त में मनाया गया था जिसके बाद सतयुग के सुख-शान्ति के दिन शुरू हुए थे। कलियुग के अन्त में होलिका जलाने से मनुष्य का दु:ख, दरिद्रता और वासना तथा व्यथा सब दूर हो गए थे। परन्तु प्रश्न उठता है कि होलिका जलाने से मनुष्य के विकार और विकर्म तथा दु:ख और क्लेश भला कैसे नाश हो सकते हैं?

'होलका' शब्द का अर्थ

कई लोगों का कहना है कि 'होलका' शब्द का अर्थ है 'भुना हुआ अन्न'। होलिका के अवसर पर लोग अग्नि में अन्न डालते हैं और गेहूँ और जौ की बालों को भूनते हैं। योगियों की बोल-चाल में ज्ञान अथवा योग को अग्नि से उपमा दी जाती है क्योंकि, जैसे भुना हुआ बीज आगे से उत्पत्ति नहीं कर सकता वैसे ही ज्ञान-युक्त और योग-युक्त अवस्था में किया गया कर्म भी अकर्म हो जाता है अर्थात् वह इस लोक में विकारी मनुष्यों के संग में फल नहीं देता। अत: 'होलका' शब्द भी हमें इस बात की स्मृति दिलाता है कि परमपिता ने पुरानी सृष्टि के अन्त में मनुष्यों को ज्ञान-योग रूपी अग्नि द्वारा कर्म रूपी बीज को भूनने की जो सम्मति दी थी, हम उस पर आचरण करें।

होली पर रंग

एक-दूसरे पर रंग डालने तथा छोटे-बड़े, परिचित-अपरिचित सभी

(शेष..पृष्ठ 27 पर)

अमृत-सूची

- परिस्थितियों में अचल-अडोल *(सम्पादकीय)* 4
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के.. 6
- विदेश में ईश्वरीय सेवा 8
- 'पत्र' संपादक के नाम 11
- व्यर्थ संकल्पों से मुक्ति 12
- गरीबी हटाओ 13
- संपूर्ण सुख-शान्ति की यात्रा ..14
- जान गया हूँ अपने दोषों को...15
- नारी तू नारायणी..... 16
- मैं धन्य-धन्य हो गई 19
- समय की पुकार *(कविता)* ...20
- देना ही लेना है 21
- धैर्य की महिमा. 22
- संगठन में कैसे रहें?.....23
- सकारात्मक सोच 25
- सत्य कर्म ही सच्चा साथी.....26
- भ्रूण हत्या: अध्यात्म में.....27
- ओ मधुर बाबा! *(कविता)* 28
- दया के सागर ने 29
- सचित्र सेवा समाचार 30
- समय, संसार व 32
- बच्चों को बचाने वाला 34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	90 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	90/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल 'ज्ञानामृत' अथवा 'द वर्ल्ड रिन्युअल' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414154383
hindigyanamrit@gmail.com

सम्पादकीय ..✍

परिस्थितियों में अचल अडोल

हम सब दिन में कई बार स्वयं भी कहते हैं और दूसरों से भी सुनते हैं कि मेरी आत्मा को नहीं सताओ, अमुक बात आत्मा को नहीं भाई, अमुक घटना से आत्मा बहुत तड़पी। प्रश्न उठता है कि यह 'आत्मा' है क्या? नाम है तो इसका अस्तित्व भी होगा। अगर यह शरीर का अंग है तो शरीर में कहाँ है और अन्य अंगों की तरह इसका आकार या कार्य क्या है? यदि यह शरीर का अंग नहीं है तो फिर क्या है और इसका रूप, रंग आदि क्या है? आइये विचार करें, आत्मा के दु:खी होने या तड़पने का अर्थ क्या है? मान लीजिए, किसी ने बहुत ही अपमानजनक और कटु बोल बोला, हमें दुख हुआ और बार-बार उसका चिन्तन करने से सारी रात सो नहीं सके। सुबह उठे तो लगा, शरीर बीमार है। चिकित्सक के पास गए और शरीर की अशक्त स्थिति की जानकारी दी। चिकित्सक ने अपने सारे यन्त्र लगा-लगा कर शरीर के हर अंग की, हर अवयव की जांच की और कहा, आपका हर अंग ठीक से कार्य कर रहा है, आपको कोई बीमारी नहीं है, आप निश्चिंत रहिए। पर क्या आप सहमत हुए? नहीं ना। आपको तो शरीर की कमज़ोरी और बीमारी अनुभव हो रही है। जब बीमारी है ही नहीं तो बीमारी जैसा अनुभव किसे हो रहा है? यह अनुभव करने वाला शरीर में कौन है और कहाँ है?

गलत चिन्तन से सकारात्मक ऊर्जा बाधित

वास्तव में वो है चेतन लेकिन अदृश्य शक्ति आत्मा जिसमें उत्पन्न होने वाले सकारात्मक सकंल्पों से शरीर के हर अंग को ऊर्जा मिलती है परन्तु चूंकि किसी ने कड़वे बोल बोले और आत्मा उस कड़वेपन के प्रभाव में आकर, अपने स्वरूप को भूलकर, उन कड़वे शब्दों और उन्हें कहने वाले का चिन्तन करने लगी, तो शरीर को मिलने वाली सकारात्मक ऊर्जा बाधित हो गई इसलिए शरीर के अंग शिथिल-से होने लगे, बीमार नहीं, बीमार-से प्रतीत होने लगे। अंगों की इस शिथिलता का बुरा प्रभाव पुन: आत्मा पर पड़ा। स्वरूप विस्मृति के कारण वह यह नहीं जान पाई कि मेरे गलत चिन्तन ने इन्हें बीमार-सा किया है इसलिए वह डाक्टर का सहारा लेने आई, पर असली बात को पकड़ने का कोई यन्त्र डाक्टर के पास भी नहीं है। आत्मा की यह स्वरूप विस्मृति की स्थिति यन्त्रों की पहुँच से परे की स्थिति है।

भावों को ग्रहण करती है आत्मा

यदि कोई व्यक्ति किसी वस्तु से चोट मारता है तो शरीर पर चोट का निशान बनता है। यदि अपने अंगों से भी दूसरे के अंगों को छूता या हताहत करता है तो निशान रह जाता है जिसे विज्ञान की प्रक्रिया द्वारा देखा-जाना जा सकता है परन्तु किसी ने कड़वा बोला, अपमानजनक बोला, इसका तो कोई निशान शरीर पर नहीं लगता। इसका कोई प्रमाण भी नहीं दिखाया जा सकता। शब्द कानों द्वारा सुने गए पर कान में तो दर्द हुआ नहीं। आँखों द्वारा बोलने वाले को देखा गया पर आंखों में दर्द हुआ नहीं। तो फिर कानों और आंखों को पार करते हुए ये बोल और बोलने वाला कहाँ जा पहुँचे जहाँ पीड़ा हुई। वास्तव में यही आत्मा है जो भावों को और अर्थों को ग्रहण करती है और उनके प्रभाव में आ जाती है। कान-आँख तो केवल साधन हैं जिनके माध्यम से बोल और दृश्य अन्दर उतरते हैं। इसलिए इन साधनों पर कोई असर नहीं हुआ पर इन साधनों का मालिक, इनका प्रयोगकर्त्ता आत्मा है, उसी पर इनका असर हुआ।

सीट पर है तो सशक्त है

इस सारी चर्चा का सार यही है कि आत्मा शरीर के अन्दर विद्यमान चेतन सत्ता है जो भृकुटी में स्थित होकर शरीर के हर अंग का प्रयोग करती है। जब तक वह अपनी सीट पर, अपने

होने का अहसास करती रहती है तब तक वह सशक्त बनी रहती है और इन्द्रियों के माध्यम से भीतर आने वाली व्यर्थ, अनचाही, नकारात्मक बातों को उपेक्षित कर देती है। 'जाने दो', 'छोड़ दो, 'भुला दो', 'मैं अपनी सीट पर सुरक्षित हूँ', 'मेरा कुछ अहित नहीं हो सकता', 'मुझे कोई छू नहीं सकता', 'मैं न्यारी-प्यारी हूँ' – इस प्रकार की भावनाओं को लिए आत्मविश्वास के साथ निश्चिंत रहती है। अपने गुण और शक्तियों के आगे, अपनी शान के आगे इन छोटी बातों के चिन्तन, वर्णन को शान के विरुद्ध, बड़प्पन के विरुद्ध समझती है। परन्तु जब अपनी सीट को भी भूल जाती है और अपने स्वरूप को भी भूल जाती है तो अपनी सकारात्मकता को भी भूल जाती है।

समर्थ के अभाव में पकड़ती है व्यर्थ को

आत्मा के अंदर गुणों और शक्तियों के विद्यमान होने के अहसास का सीधा सम्बन्ध आत्मा के निज स्वरूप की स्मृति से है। उसका स्वरूप बना ही गुणों से है। ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, प्रेम, सुख, आनन्द, शक्ति, यही तो उसके घटक हैं। स्वरूप में रहना माना ही इन गुणों के प्रयोग में रहना। स्वरूप को भूलना माना ही इन गुणों का प्रयोग रुक जाना, बाधित हो जाना। जैसे प्रकाश न होने पर अंधकार अपने आप आ जाता है, इसी प्रकार, गुणों के प्रयोग के बाधित होने पर अवगुण अपने आप आ जाते हैं। इसलिए जब आत्मस्वरूप की स्मृति भूल गई तो सदगुणों का प्रयोग बाधित हुआ और उस समय इन्द्रियों द्वारा कोई अनचाही, नापसन्द, आलोचनात्मक बात भीतर आ गई तो आत्मा पहले की तरह निर्भय और निश्चिंत नहीं रह पाती। **चूंकि उसके पास पकड़े रहने के लिए कोई समर्थ बात या समर्थ चिन्तन नहीं है तो वह इंद्रियों द्वारा भीतर भेजे गए उस व्यर्थ को पकड़के बैठ जाती है। उसे पकड़ती भी है और उससे दुखी भी होती है। जैसे कोई बिच्छू को पकड़े भी और डंक भी खाए। पकड़ना और छोड़ना अपने वश में होते भी सीट से उतरी आत्मा इतनी अशक्त हो जाती है कि वह बार-बार यही कहती है कि मैं भूलना चाहती हूँ पर भुला नहीं पाती हूँ। मैं बात को छोड़ना चाहती हूँ पर बार-बार आ जाती है। इसलिए जैसे अंधकार को भगाने का तरीका है ज्योति जलाना, इसी प्रकार, आत्मा को बोझिल करने वाली इस प्रकार की व्यर्थ बातों से बचाने का तरीका है, आत्म-स्वरूप में टिकना।**

यह घर जाने का समय है

आत्मा का स्वरूप है ज्योतिबिन्दु, दिव्य प्रकाश का एक कण। यह चेतन शक्ति है जिसके शरीर में मौजूद रहने तक शरीर का हर अंग अपना-अपना कार्य सुचारू रूप से करता है। यह शरीर को धारण करती है अपने गुणों को, अपने पार्ट को प्रकट करने के लिए और निश्चित अवधि पूरी होने पर इसे छोड़कर चली जाती है अगला पार्ट बजाने। इसे कोई भौतिक शक्ति नुकसान नहीं पहुँचा सकती। यह अमर है, परमात्मा की सन्तान है, परमात्मा का धाम परमधाम इसका स्थाई निवास है जो सूर्य, चाँद, तारागण से भी पार है। वहाँ अखण्ड शान्ति और पवित्रता है और करोड़ों आत्माएँ एक छत्ते की तरह वहाँ परमात्मा के सानिध्य में रहती हैं। सृष्टि मात्र रंगमच है जिसमें ये करोड़ों आत्माएँ समयानुसार पार्ट बजाने उतरती हैं। चारों युगों के एक चक्र के पूर्ण होने पर ही वापस परमधाम लौटती हैं। अब वही समय आकर पहुँचा है। कल्प का अन्तिम चरण, जिसे पुरुषोत्तम संगमयुग कहते हैं, चल रहा है। अब सब आत्माओं को वापस अपने घर परमधाम जाना है । वहीं से नए कल्प के प्रथम युग सतयुग में पार्ट बजाने आना है।

आत्मा भृकुटी सिंहासन पर बैठकर इस स्मृति में पार्ट बजाए कि मैं तो ज्ञान स्वरूप आत्मा हूँ, पवित्र स्वरूप आत्मा हूँ...। इसे ही स्वमान की सीट कहते हैं। स्वरूप और स्वमान की स्मृति में रहने से कोई भी बाह्य परिस्थिति उसे बिना हिलाए पार चली जाती है और वह परिस्थितियों के बीच भी अचल-अडोल स्थिति का आनन्द लेती है।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ...

– सम्पादक

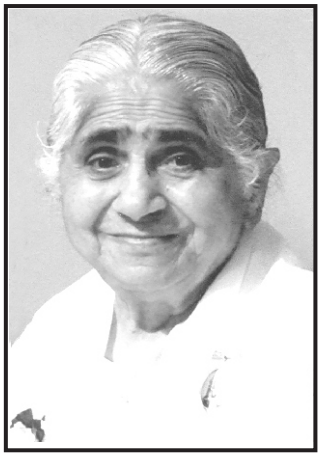

प्रश्नः- समयानुसार उड़ती कला में जाने के लिए किन बातों को ध्यान पर रखें?

उत्तरः- 1. हमें किसी के साथ टक्कर या चक्कर में नहीं आना है। किससे बनती है, किससे नहीं बनती है, जो मेरी महिमा करे वो अच्छा है, जो न करे वो अच्छा नहीं है, यह भी बंधन है, ऐसा संस्कार नहीं चाहिए।

2. सर्व संबंधों का अनुभव एक बाप से करो तो निर्भय, निर्वैर बनेंगे। याद ऐसी हो कि हम यहाँ हैं ही नहीं। बाबा के साथ रहते हमारी वृत्ति भी बेहद की हो जाये। बाबा ने किसी की कमी नहीं देखी। हमें भी किसकी कमी नहीं देखनी है।

3. बातें आयेंगी, चली जायेंगी। डोंट वरी, नो प्रॉब्लम। कभी चिंता वा फिकर न हो। करनहार भी बाबा, करावनहार भी बाबा, हमको सदा आत्म-अभिमानी बनकर, ट्रस्टी होकर रहना है।

4. न हमको कोई एरिया है, न स्टूडेन्टस हैं, न सेन्टर है, कुछ नहीं है। जहाँ पाँव रखो अपना यज्ञ है। यज्ञ सेवा करने से हमारा संकल्प और समय सफल होता है। मैं जो करती हूँ, अपने लिए करती हूँ और वही करती हूँ जो बाबा ने सिखाया है।

5. यह अटेन्शन ज़रूर रहे कि जैसा कर्म मैं करूँगी, मुझे देख और करेंगे। व्यर्थ सोचना, बोलना यह पाप का अंश है, तो ये बातें मेरे में न हों। यह है सावधानी की सीढ़ी, चढ़ती कला में आगे बढ़ने के लिए।

6. जो ईश्वरीय लॉ वा मर्यादा अनुसार नहीं है उसे महसूस करके अपने को बदलना है। कोई घड़ी ऐसी न हो जो हम कहें कि आज हमारा मन ठीक नहीं है। व्यर्थ संकल्प पैदा करने की नेचर साइलेन्स की भट्ठी में सदा के लिए खत्म कर दो।

प्रश्नः- सर्वगुण संपन्न बनने के लिए श्रेष्ठ धारणायें कौन-सी हैं?

उत्तरः- हम सर्वगुण संपन्न तब बनेंगे जब किसी का अवगुण दिखाई न दे। हरेक का अपना गुण है। हरेक अपने गुण से सेवा कर रहे हैं, मैं अपने गुण से सेवा कर रही हूँ। मैं क्यों कहूँ कि इसमें गुण नहीं हैं। बाबा ने हरेक की कोई न कोई विशेषता देखकर, अपना बनाकर सेवा कराई है। हरेक का पार्ट नूंधा हुआ है। तो ज्ञान को पीस-पीस करके अंदर ले लेना है। समझो, आप मुझे राय देते हो, तो मैं आपकी बात को कट नहीं करूँगी, अच्छी है। निमित्त बनके राय करने में कोई हर्जा नहीं है पर ऐसे नहीं कि यह मेरी राय मानता नहीं है। अभिमान ऐसा है जो पता ही नहीं पड़ता है कि मेरे में यह अभिमान है। कार्य-व्यवहार में अभिमान नहीं है तो देही-अभिमानी स्थिति है। कार्य में अटैचमेन्ट नहीं है, कर्म से न्यारे हुए तो अशरीरी बन गये। न्यारा रहने से परमात्म प्यार की शक्ति आत्मा में भर जाती है। अगर किसी आत्मा को कोई समस्या है तो उसे भी ठीक कर देते हैं। ऐसा सकाश हो, इतना स्नेह हो जो उसकी समस्या चली जाये। हमारे स्नेह में इतनी ताकत हो जो और चिन्ता करना छोड़ दें।

तन की बीमारी तब तक नहीं

छोड़ती है जब तक मन बीमार है। भले हिसाब-किताब कुछ होता है लेकिन यह ख्याल ही न आये कि यह क्या हुआ, क्यों हुआ? याद का बल जमा होता जाये, यह ध्यान रखना है। ख्याल ही न उठे कि यह हिसाब-किताब क्यों आया! अंदर से आवाज़ निकले कि सबका भला हो। संस्कारों में स्मृति रहे कि सबका भला हो। जैसी स्मृति रहेगी, वैसी वृत्ति होगी, वैसी दृष्टि होगी। जिसको रुचि होती है वो हर बात की गहराई में जाता है, फिर और बातों से न्यारा होता जाता है। वायुमण्डल ईश्वरीय आकर्षण वाला हो तो किसी भी आत्मा को पिघला सकता है। बाबा बच्चों में अपनी सब खूबियाँ भर रहा है। ताकत चाहिए जो भगवान की खूबियाँ हम बच्चों में आ जायें। राजाई पद पाने की खूबी आ जाये, और वो आयेगी भी अभी। अभी शब्द का महत्त्व है।

प्रश्नः- सहज पुरुषार्थ के लिए मुख्य बातें कौन-सी हैं?

उत्तरः- सहज रीति पुरुषार्थ हो, सफलता मिले, कभी नाउम्मीदी न आए, निराश न होवें इसके लिए पुरुषार्थ में हिम्मत, विश्वास, सफाई चाहिए। कराने वाला बाबा करा रहा है, करने वाले हम बच्चे हैं। संगठन की शक्ति में पुरुषार्थ सहज हो जाता है। हर एक को बाबा की पर्सनल मदद है पर संगठन की शक्ति में, मधुबन के वातावरण में पुरुषार्थ करना सहज होता है। इसके लिए तीन बातें ध्यान में रखना, **एकनामी, एकव्रता, एकाग्रता**। व्रत क्या है, वृत्ति हमारी सदा त्याग वृत्ति होवे, त्यागवृत्ति से सदा तपस्वीमूर्त हैं फिर सेवाधारी हैं।

प्रश्नः- किन संकल्पों से हिसाब-किताब बन जाता है?

उत्तरः- सही दृष्टिकोण है, हम बदलेंगे, जग बदलेगा। अगर सोचते कि पहले यह बदले, तो हम कभी नहीं बदलेंगे। क्या अभी तक यह ख्याल करेंगे कि यह बदले, यह करे..यह भी सोचा तो हिसाब-किताब बन गया। ऐसी बातें दिल से महसूस करो, कई बार अपने आप महसूस नहीं होती हैं, संगठन में सहज अनुभव हो जाती हैं। अनुभव करना माना मुझे बदलना है।

प्रश्नः- ज्वालामुखी योग क्या है?

उत्तरः- बाबा कहता है, एवररेडी। अचानक कुछ भी हो जायेगा, तो क्या ज्वाला काम कर रही है? लगन की अग्नि हमारे पर, चाहे सारे विश्व पर काम नहीं कर रही है तो मैं क्या कर रही हूँ! अगर थोड़ा भी सूक्ष्म में कोई भी विकार है तो योग ज्वाला रूप नहीं है। ज्वालारूप योग माना ही ऐसी पावरफुल याद जिसमें विकर्म विनाश हो जायें, हिसाब-किताब चुक्तू हो जायें, कर्मातीत स्थिति का अनुभव होने लगे, संपूर्णता सामने दिखाई दे।

प्रश्नः- वहम की बीमारी से बचने की युक्ति क्या है?

उत्तरः- हम बाबा के बने तो ट्रस्टी हो गये। ट्रस्टी माना यह तन-मन-धन आपका, मेरा कुछ नहीं। कहा जाता है, वहम की बीमारी का कोई इलाज नहीं है। वहम की बीमारी सूक्ष्म संशयबुद्धि बना देती है, भ्रम में डाल देती है। किसी कारण से भी किसी के प्रति भाव-स्वभाव का भी अंदर वहम बैठ गया, तो चाहे वह बदल जायेगा, पर मेरी बुद्धि में वही वहम बैठा रहेगा। हर एक की चढ़ती कला है, आगे बढ़ते जा रहे हैं। पीछे मुंह करके देखा तो मेरा मुंह कैसा होगा इसलिए बाबा कहते, हमेशा सामने देखो। सामने देखने से निश्चय अडोल बना देता है। हलचल कितनी भी हो, फ्री हैं। कहाँ भी रहते अचल-अडोल रहें।

प्रश्नः- क्रोध या आवेश का अंश भी नुकसान करता है, कैसे?

उत्तरः- बाबा की साकार मुरलियों में इशारा मिल रहा है, बच्चे, क्रोध मत करो, बड़ा नुकसानकारक है। थोड़ा भी क्रोध, आवेश हमारी अंदर की भावना सच्ची, शुद्ध, श्रेष्ठ बनने नहीं देता है तो हर एक पुरुषार्थ करके देखे। कभी भी किसी कारण से मेरे अंदर क्रोध का अंश ना होवे। अगर होवे तो महसूस करके खत्म करना, भट्ठी करने का मतलब यही है, संगठन का फायदा है। पुरुषार्थ में बाबा कहता है, जो करना है अब कर ले, जैसे बाबा करा रहा है, श्रीमत दे रहा है, उसी अनुसार पुरुषार्थ करो।

❖

विदेश में ईश्वरीय सेवा का प्रारंभ - 4

● ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

आप सबको ज्ञात होगा कि हम छह डेलीगेट्स मधुबन से विदेश यात्रा के लिए लंदन, अमेरिका होते हुए हांगकांग पहुँचे। डॉ. निर्मला बहन तो सेनफ्रांसिस्को से लंदन चली गई, बाकी हम पाँच डेलीगेट्स वहाँ के हिन्दू मंदिर के अतिथिगृह में ठहरे।

यह हिन्दू मंदिर वास्तव में विदेश की ईश्वरीय सेवा का आदिस्थान है। सन् 1952-53 में दादी जानकी पंजाब के अमृतसर में ईश्वरीय सेवा पर गये थे। वहां उन्हें मालूम चला कि जापान में विश्व धर्म सम्मेलन होने वाला है। दादी जानकी ने यह समाचार मधुबन भेजा परंतु इस सम्मेलन के बारे में उन्हें पूरी जानकारी नहीं थी। ब्रह्मा बाबा ने दादी प्रकाशमणि तथा दादी रतनमोहिनी को बुलाया और कहा कि आप कलकत्ता जाओ, वहाँ से जापान जाने का प्रबंध हो जायेगा। इस संबंध में मैंने दादी प्रकाशमणि से एक सवाल पूछा था कि दादी जी, आपके पास जापान में होने वाले सम्मेलन की कोई जानकारी नहीं थी, ना पासपोर्ट था, ना विदेशी धन था फिर भी आपने इतना निश्चयबुद्धि बन कलकत्ता जाने की श्रीमत का पालन किया! तब दादी जी ने बहुत सुंदर जवाब दिया कि यह प्रश्न था ही नहीं। मन में सिर्फ एक बाबा की श्रीमत थी। एक बल, एक भरोसे के आधार पर सब हो गया। यह उत्तर सुन मन में संकल्प आया कि क्या मुझे बाबा की श्रीमत पर इतना विश्वास है कि किसी बात के आदि-मध्य-अंत को जाने बिना पूर्ण रूप से श्रीमत पर विश्वास कर कार्य करूँ? तब मन से जवाब आया कि जितना ब्रह्मा बाबा तथा दादियों को बाबा की श्रीमत पर भरोसा था, उतना मुझे नहीं है। हम तो कभी-कभी श्रीमत में मनमत के आधार पर विशेष जानकारी हेतु प्रश्न पूछते रहते हैं, इसी कारण दादियां दादियां बन गईं और हम जिज्ञासु ही रह गये। वास्तव में दादियों जैसा बाबा की श्रीमत पर पूर्ण विश्वास की मूर्ति बनना ज़रूरी है।

इस पर शास्त्रों में एक वृत्तांत भी है। एक राजा ने अपने राजगुरु कुमारिल भट्ट से प्रश्न पूछा कि क्या वेद अपौरुषेय हैं? कुमारिल भट्ट ने कहा, हाँ, वेद अपौरुषेय हैं तो राजा ने कहा, अगर वेद अपौरुषेय हैं तो अगर आप महल की चौथी मंजिल से नीचे कूदेंगे तो आपको चोट नहीं लगेगी। कुमारिल ने कहा, ठीक है, मैं चौथी मंजिल से छलांग लगाऊँगा, मुझे कुछ नहीं होगा। कुमारिल ने छलांग लगाई और उसके पैर की हड्डी टूट गई।

इस पर कुमारिल भट्ट के मन में प्रश्न आया कि अगर वेद अपौरुषेय हैं तो फिर मेरे पैर की हड्डी क्यों टूटी? तभी आकाशवाणी हुई कि आपने छलांग लगाने से पहले यह कहा था कि अगर वेद अपौरुषेय हैं तो मुझे कूदने के कारण कोई शारीरिक क्षति नहीं होगी। आपने 'अगर' शब्द का प्रयोग किया। इसका मतलब आपको अपनी बात पर सौ प्रतिशत विश्वास नहीं है। अगर सौ प्रतिशत विश्वास होता तो अवश्य मेरी मदद मिलती और तुम्हें कुछ भी नुकसान नहीं होता। हमारी दादियों का बाबा की श्रीमत पर सौ प्रतिशत विश्वास है जिससे ईश्वरीय सेवाओं में इतनी वृद्धि हुई है।

जब दादी प्रकाशमणि और दादी रतनमोहिनी कलकत्ता पहुँचीं तो दोपहर में जब वे अपने एक परिचित के घर जा रहे थे तो उन्होंने गोविन्द भाई को देखा और पूछा कि तुम कहाँ जा रहे हो? गोविन्द भाई वास्तव में सिनेमा देखने जा रहा था परंतु संकोचवश उन्होंने कहा, कहीं भी नहीं। दादी ने कहा, फिर आप हमारे साथ भोजन करने चलिये। गोविन्द भाई का लौकिक परिवार आदि सब यज्ञ में समर्पित थे परंतु बाद में किन्हीं कारणों से वे यज्ञ से अलग हो गये तथा पूणे में जाकर स्थायी हुये। वहाँ से ही वे नौकरी के लिए हांगकांग गये। हांगकांग से छुट्टी में पूणे आये हुए थे

और कलकत्ता होते हुए वापस हांगकांग जा रहे थे परंतु बंगाल में हड़ताल होने के कारण ट्रेन 12 घंटे लेट पहुंची। उनकी हांगकांग की फ्लाइट छूट गई। उन्हें चार दिन का विश्राम कलकत्ता में करना पड़ा। इसी बीच उनका दोनों दादियों से मिलना हुआ। जब गोविन्द भाई छोटे थे तो इन दादियों ने उन्हें कराची में बच्चों की बोर्डिंग में टीचर के रूप में ईश्वरीय ज्ञान पढ़ाया था।

गोविन्द भाई ने जब दादी से पूछा कि आपका कलकत्ता कैसे आना हुआ तो दादी ने जापान में होने वाले विश्व धर्म सम्मेलन के बारे में बताया। गोविन्द भाई ने पूछा कि इस सम्मेलन का आयोजन कौन कर रहा है, आप वहाँ कैसे जायेंगे, क्या आपके पास पासपोर्ट तथा वीज़ा आदि है? दादी ने कहा कि इन सब बातों का प्रबंध आपके द्वारा बाबा करायेगा। गोविन्द भाई को हंसी आ गई यह सोचकर कि इन बहनों को मालूम नहीं है कि हांगकांग तथा जापान के बीच बहुत दूरी है। मैं कैसे हांगकांग में बैठे-बैठे जापान की कांफ्रेंस के लिए प्रबंध कर सकूँगा। परन्तु दादियों ने जो विश्वास उनमें रखा तो उन्होंने सोचा कि मुझे ज़रूर इस ईश्वरीय सेवा में निमित्त बनना होगा।

भोजन करके गोविन्द भाई ने विदाई ली। वह दिन शुक्रवार शाम का था। गोविन्द भाई को हांगकांग के लिए फ्लाइट मिल गई। अगले दिन शनिवार सुबह उन्होंने हांगकांग में नौकरी ज्वाइन कर ली। अगले दिन रविवार की छुट्टी थी। वे सैर के लिए निकले और पास के हिन्दू मंदिर में दर्शन के लिए गये। मंदिर के दरवाज़े बंद थे, वे खुलने का इंतजार करने लगे। अचानक उनकी नज़र एक निमंत्रण पत्र पर पड़ी जो पुजारी के नाम पर था। उसमें जापान की कांफ्रेंस का निमंत्रण था तथा पूरी जानकारी थी। कांफ्रेंस अगले शनिवार को जापान में होने वाली थी। तभी मंदिर के दरवाज़े खुल गये। उन्होंने पुजारी की स्वीकृति से निमंत्रण-पत्र अपने पास रख लिया। फिर अपने ऑफिस जाकर कांफ्रेंस आयोजित करने वाली संस्था को बहुत सुंदर शब्दों में पत्र लिखा कि ब्रह्माकुमारियों के बिना आपकी कांफ्रेंस असफल रहेगी। जैसे शरीर में आत्मा है, वैसे ही आपकी कांफ्रेंस की आत्मा ये ब्रह्माकुमारी बहनें बनेंगी। इसलिए आप उन्हें अवश्य ही निमंत्रण पत्र भेजो। दादियां कलकत्ता में जहाँ ठहरी थीं, वहाँ का पता लिखकर वे तुरंत पोस्ट ऑफिस गये। ड्रामानुसार पोस्टमेन पत्र निकाल रहा था, उन्होंने अर्जेन्ट लिखकर पोस्टमेन को पत्र दिया। चार दिन बाद उन्हें दादियों का टेलीग्राम मिला कि हम शुक्रवार सुबह एयर इंडिया की फ्लाइट से जापान जा रही हैं, बीच में हांगकांग आयेगा, आप एयरपोर्ट पर हमारे लिए भोजन लेकर आना। गोविन्द भाई आश्चर्य में पड़ गये कि दोनों बहनों का जापान जाने का प्रबंध कैसे हुआ। लेकिन उन्होंने शिवबाबा की श्रीमत पर पूर्ण श्रद्धा रखी। खाना टिफिन में भर एयरपोर्ट पहुँचे। बहनों ने खाना खाया। फिर बताया कि आपका पत्र सोमवार को जापान की आयोजक संस्था को मिला और उन्होंने सोमवार को ही निमंत्रण का टेलीग्राम भेज दिया। हम उसे लेकर पासपोर्ट ऑफिस गये और हमें पासपोर्ट मिल गया। जापान के दूतावास से तुरंत ही वीज़ा भी मिल गया। गुरुवार के दिन हम एयरइंडिया के ऑफिस में टिकट के लिए गये। वहाँ के अधिकारी ने बताया कि शुक्रवार सुबह हमारा एक विशेष विमान जापान में होने वाले विश्व धर्म सम्मेलन के लिए रवाना होने वाला है जिसके सब मेहमानों को हम फ्री टिकट्स दे रहे हैं। उसने कहा कि पहले विश्व धर्म सम्मेलन में भारत के तत्वज्ञान का झंडा विवेकानंद ने लहराया था तो इस धर्म सम्मेलन में आप बहनें जाकर झंडा लहरायें। इस प्रकार से दादियों को फ्री टिकट मिली जो एक साल के लिए वैध थी। शुक्रवार सुबह दोनों दादियाँ उस विशेष विमान से जापान के लिए रवाना हुईं।

जापान में हुए उस विश्व धर्म सम्मेलन का मेरे जीवन में भी विशेष स्थान रहा है। मैं उस समय विश्व

विद्यालय का सहयोगी सदस्य था और मुंबई में माधव बाग की गीता पाठशाला का सक्रिय कार्यकर्त्ता था जिसके मुख्य संचालक पांडूरंग शास्त्री थे। उन्हें भी जापान का निमंत्रण मिला था। मैने पूज्य शास्त्री को ब्रह्माकुमारीज़ का परिचय दिया था क्योंकि मेरी माताजी उस समय ब्रह्माकुमारीज़ में जाती थी। मैंने शास्त्री जी को कहा कि आपको जापान में भोजन की तकलीफ होगी। ये बहनें बहुत अच्छा भोजन बनाती हैं, इसलिए उनके वहाँ भोजन का प्रबंध हो जाये तो अच्छा रहेगा। इससे आपको यह भी जानने को मिलेगा कि ब्रह्माकुमारीज़ में परमात्मा का दिव्य कार्य कैसे हो रहा है। मैंने एक पत्र कलकत्ते में बहनों को भेजा जिसमें पांडूरंग शास्त्री का परिचय दिया कि वे बड़े नामी-गिरामी विद्वान हैं और गीता पर सुंदर प्रवचन करते हैं। जापान में उनका आपस में मिलना हुआ। पांडूरंग शास्त्री को जापान वालों ने एक सत्र का प्रमुख भी बनाया था। जितने दिन तक कांफ्रेंस चली, पांडूरंग शास्त्री तथा उनके साथी मगन भाई शाह ने सुबह का नाश्ता, दोपहर और रात का भोजन दादियों के साथ स्वीकार किया। बहनें तो जापान में और समय भी रहीं। वहाँ से वे हांगकांग, सिंगापुर, मलेशिया आदि स्थानों की ईश्वरीय सेवा करके करीब एक साल बाद भारत पहुंचीं। भारत में उनके स्वागत के लिए ब्रह्मा बाबा ने दादा विश्वकिशोर तथा जगदीश भाई को भेजा।

पांडूरंग शास्त्री जापान से जब भारत आये तब मैं उनसे मिला तब उन्होने मुझे धन्यवाद दिया और कहा कि जापान में भोजन की समस्या थी। आपने अच्छा किया, हमें बहनों के हाथ का ब्रह्माभोजन मिला। उन्होंने जब दादियों से यज्ञ का इतिहास सुना तब उनके मन में विचार चला कि कैसे पुरुष प्रधान संस्कृति ने ब्रह्माकुमारी बहनों की संस्था पर अनेक प्रकार की समस्यायें खड़ी कीं और कैसे इन सबने परमात्म शक्ति से इसका सामना किया। पांडूरंग शास्त्री के मन में ब्रह्माकुमारीज़ के लिए सकारात्मक विचारधारा चली जिस कारण जब सन् 1961 में मैंने उनसे छुट्टी मांगी कि अब मैं ब्रह्माकुमारीज़ का सक्रिय कार्यकर्त्ता बनने जा रहा हूँ तब उन्होंने मुझे खुले दिल से छुट्टी दी और ऊषा जी को यह शुभ राय दी कि तुझे यह जो साक्षात्कार हो रहे हैं, यह प्रभु का संकेत मिल रहा है, तुम उस व्यक्ति के साथ शुभ विवाह करो तो तुम्हें परमात्मा की एक्स्ट्रा मदद मिल जायेगी। इस प्रकार मेरा जो अलौकिक विवाह ऊषा जी के साथ हुआ, उसका प्रेरणा स्थान भी हांगकांग का हिंदू मंदिर, जापान का सम्मेलन तथा बहनों का ब्रह्मा भोजन रहा जिस कारण परमात्मा का परिचय पांडूरंग शास्त्री को मिला। पांडूरंग शास्त्री मुंबई में वाटरलू मेन्शन में ब्रह्मा बाबा से तथा हमारे घर पर मातेश्वरी से मिले थे।

इसी दिव्य स्मृति में हम हांगकांग के हिन्दू मंदिर में रहे। वहाँ भोजन की अच्छी व्यवस्था हो गई तथा मुरली आदि भी चलती रही। सिंधी परिवार के अनेक बहन-भाई पूर्व परिचित होने के कारण वहाँ आते रहे। वहाँ अलग-अलग स्थानों पर हमने प्रदर्शनी की, नामी-गिरामी वी.आई.पी. से संपर्क भी हुआ। भ्राता श्याम जी तथा उनकी युगल हीरू बहन जो हांगकांग में रहते थे, उन्हें अमेरिका में रहने का ग्रीन कार्ड मिल गया इसलिए वे हांगकांग छोड़ अमेरिका चले गये तथा जिस फ्लैट में वे रहते थे, वह हमें आसानी से ईश्वरीय सेवार्थ मिल गया। हांगकांग के दादा राम जिन्होंने नक्की लेक नजदीक विश्व नवनिर्माण संग्रहालय की स्थापना में सुंदर पार्ट बजाया था, वे और उनकी युगल सावित्री माता ने भी बहुत अच्छी मदद की। इस प्रकार हांगकांग में ईश्वरीय सेवाकेन्द्र की स्थापना हुई। मैं वहाँ से सिंगापुर गया, फिर मुंबई आया। लेकिन जगदीश भाई, शील दादी, रोजी बहन तथा ऊषा जी ने हांगकांग में काफी अच्छी सेवायें कीं। सिंगापुर में मैं चार-पाँच दिन रहा और वहाँ जो ईश्वरीय सेवा हुई, उसका वृत्तांत अगले लेख में लिखूँगा। ❖

'पत्र' संपादक के नाम

नवंबर, 2012 अंक में 'समय की पहचान' लेख गहनता से आंतरिक परिवर्तन करने वाला सिद्ध हुआ है। समय की बरबादी जीवन की बरबादी है। कल का संबंध काल से है। समय सीमित है परंतु मनुष्य की अपेक्षायें असीमित हैं। यदि आवश्यकतायें सीमित कर दी जायें तो सीमित समय में से भी कुछ समय बचाया और सफल किया जा सकता है।

– ब्र.कु.जी.एस.परिहार, छतरपुर

नवंबर, 2012 अंक पढ़कर काफी प्रसन्नता और ज्ञान की प्राप्ति हुई। 'समस्त प्रतिभाओं का अजस्त्र स्त्रोत - मौन' पढ़कर मैंने उस पर अमल करना शुरू किया। काफी लाभ मिला। लेख 'मर्दानगी और कायरता' पढ़कर बहुत सुकून मिला। वास्तव में पत्नी का स्थान उच्च दर्जे का है। लेख पढ़कर निश्चित रूप से नारी के प्रति सम्मान बढ़ गया। ज्ञानामृत पढ़ने से बेहद लाभ मिला है। इसके लेख जीवन में बदलाव लाकर सुख प्रदान करते हैं।

– प्रदीप ताम्रकार, धमधा (दुर्ग)

नवम्बर, 2012 अंक में सम्पादकीय लेख में आध्यात्मिक मूल्यों और आधुनिकता का मूल्यांकन आपने कमाल का समझाया है। मेरे पास तो लिखने के लिए शब्द ही कम पड़ रहे हैं, क्या लिखूँ? अक्टूबर, 2012 का सम्पादकीय 'पूर्व जन्म की स्मृति : क्यों व कैसे?' भी सत्य व ज्ञानवर्धक है। इसी अंक में 'आध्यात्मिकता के प्रति अजब दीवानगी है पश्चिम में' लेख का एक प्रश्न और उसका उत्तर काफी प्रेरणा दे गया मेरे जीवन में। 'बीती पर बिन्दी लगाना' और 'अप्रिय घटनाओं को भूलना' इनसे ही जीवन में बदलाव आयेगा।

– ब्र.कु. राजरानी, इलाहाबाद

एक बहन ने मुझे अपनी दर्द भरी दास्तान सुनाते हुए कहा, मैं आत्महत्या करने जा रही हूँ। मैंने उसे एक ज्ञानामृत पत्रिका दी जो मेरे हाथ में थी। उसमें एक अन्य बहन ने अनुभव लिखे थे, जो इस बहन से भी ज्यादा दु:खी थी लेकिन बाबा से जुड़कर उसने जीवन को सहज सुखमय बना लिया था। अगले रोज आत्महत्या करने जाने वाली बहन मुस्कराती हुई आई और कहा, ज्ञानामृत में छपे उस बहन के लेख से मुझे जीवन जीने की सही और सुगम राह मिल गई। ज्ञानामृत के सभी लेख, कविताएँ और विचार कितने उत्कृष्ट और सार्थक हैं उनके लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं, केवल भाव हैं, जो लिखे नहीं जा सकते, केवल महसूस किए जा सकते हैं। नवम्बर, 2012 अंक का 'मर्दानगी या कायरता' लेख समाज को जगाने के लिए काफी है।

– ब्र.कु. विजय हाडा, सिलिगुड़ी

नवम्बर, 2012 अंक का लेख 'असाधारण चरित्र' अति शिक्षाप्रद है जो संदेश दे रहा है, सहनशील बनो, दयालु बनो, कड़वा देने वालों को भी मीठा देने की आदत डालो तथा अपने हाथों से लेने के बजाए देने की आदत डालो। एक साधारण फकीर ने गुणदाता बन कर बहुत गहरी बात समझाई है।

– ब्र.कु.सुदर्शन,
मालवीय नगर, नई दिल्ली

अक्टूबर, 2012 अंक में 'पूर्व जन्म की स्मृति-क्यों और कैसे' एवं 'मांसाहार के नुकसान' लेख अच्छे लगे। पत्रिका के हर पेज के नीचे लिखे स्लोगन्स ने पत्रिका को चार चाँद लगा दिए हैं। पत्रिका न केवल ज्ञानवर्धक है बल्कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का दर्पण भी है।

– ब्र.कु. प्रदीप भाई, पटना

नवम्बर अंक में 'मौन' लेख बहुत भाया। जिन्हें पढ़ने को देता हूँ, सब सराहना करते हैं। लेख के मुख्य अंश कापी पर उतार लिए हैं।

– चन्डी प्रसाद उनियाल,
दिलशाद कालोनी, दिल्ली

व्यर्थ संकल्पों से मुक्ति

● ब्रह्माकुमार भगवान, शान्तिवन

संकल्प ही हमारे पुरुषार्थ का मूल आधार हैं। नकारात्मक या व्यर्थ संकल्पों से पुरुषार्थ ढीला हो जाता है, बुद्धि अस्वच्छ बन जाती है जिस कारण बुद्धि रूपी नेत्र द्वारा परमधाम में रहने वाले परमात्मा को हम स्पष्ट देख या अनुभव नहीं कर सकते। अस्वच्छ बुद्धि एकाग्र नहीं होती है। व्यर्थ संकल्पों के कारण शक्तियाँ और सद्गुण भी हमें साथ नहीं देते। व्यर्थ के कारण मन भारी होता है इसलिए वर्तमान समय व्यर्थ संकल्पों से मुक्त बनने की बहुत आवश्यकता है।

व्यर्थ संकल्पों से मनोबल कम

स्थिर पानी में ही आकाश के चंद्रमा को स्पष्ट देख सकते हैं, वैसे ही स्थिर मन में ही परमधाम के परमात्मा को हम स्पष्ट देख सकते हैं। आईने के ऊपर धूल होगी तो प्रतिमा स्पष्ट दिखाई नहीं देगी, ऐसे ही व्यर्थ संकल्पों की धूल बुद्धि रूपी आईने पर होगी तो आत्मदर्शन वा परमात्म दर्शन स्पष्ट नहीं कर सकते। व्यर्थ विचारों के कारण आत्मबल वा मनोबल कमजोर बन अनेक मानसिक और शारीरिक बीमारियाँ होने की संभावना होती है। व्यर्थ से मुक्त रहने वाला ही ज्ञान का मनन, चिंतन कर कर्मयोगी वा स्थितप्रज्ञ योगी बन सकता है।

ज्ञान-मनन से बुद्धि एकाग्र

वास्तव में देखा जाये तो योगाभ्यास में विभिन्न प्रकार के विघ्न आते हैं, उनका मूल कारण भी व्यर्थ संकल्प ही हैं। योग में माया आती है माना कोई राक्षस आकर हमें हिलाता नहीं बल्कि दिनभर की परिस्थितियों के नकारात्मक संकल्प मन-बुद्धि को एकाग्र होने नहीं देते, आत्मचिंतन, परमात्म चिंतन करने नहीं देते। ज्ञान के आधार से जो साधक दिनभर अपनी बुद्धि को वस्तु, वैभव, व्यक्ति के प्रभाव से मुक्त रखता है, वहीं स्थितप्रज्ञ होकर साधना कर सकता है। जहाँ बुद्धि प्रभावित होती है, वही मन में व्यर्थ विचार चलते हैं। बुद्धि को एक परमात्मा के सिवाय अन्य बातों में प्रभावित न होने देना इसके लिए रोज़ ज्ञान सुनने और मनन करने की आवश्यकता है।

व्यर्थ से जन्मते हैं घृणा, क्रोध..

मन में चलने वाले व्यर्थ संकल्पों से भावना, दृष्टि, दृष्टिकोण, वृत्ति और व्यवहार भी नकारात्मक बन जाता है। जिसके प्रति मन में व्यर्थ विचार चलते हैं, उसके प्रति घृणा, नफरत, वैर, विरोध, क्रोध और बदला लेने की भावना जागृत होती है जिससे आपसी स्वभाव-संस्कारों में टकराव, बिखराव पैदा होता है। फिर उस व्यक्ति से किनारा करेंगे, उसकी महिमा सुन नहीं सकेंगे, उसको सहयोग नहीं देंगे, उसके अंदर दोष ही दोष नज़र आयेंगे, उसके प्रति शुभ-भावना, शुभकामना नहीं दे पायेंगे, उसके बारे में अनेक व्यर्थ बातें दिल में रहेंगी। जहाँ ऐसी बातें हैं वहाँ बाप (परमात्मा) नहीं होगा। ऐसी बातों से ही पुरुषार्थ ढीला बन जाता है। समय व्यर्थ जाता है। इसलिए वर्तमान समय व्यर्थ संकल्पों से मुक्त बनने की सख्त आवश्यकता है जिससे ही हम समर्थ आत्मा बन सकेंगे।

क्रोध से बीमारियाँ

प्रेशर कुकर को गैस पर रखने से वह गर्म होकर कुछ समय के बाद सीटी मारना शुरू कर देता है। इसी प्रकार जिसके मन में व्यर्थ संकल्प चलते हैं, वह अंदर ही अंदर गर्म हो जाता है फिर वह सीटी मारना प्रारंभ करता है अर्थात् उसको गुस्सा आता है। क्रोध के कारण उसके शरीर की अनेक कोशिकायें मृत हो जाती हैं जिसके कारण अनेक शारीरिक बीमारियाँ होने की संभावना होती है। तनाव तो नकारात्मक विचारों का ही परिणाम है। व्यर्थ संकल्प ही शंका, कुशंका, अनुमान पैदा करते हैं जिस कारण कार्य में असफलता मिलती है। इसलिए व्यर्थ संकल्पों से मुक्त बनने की अति आवश्यकता है।

नकारात्मक नज़रिया तो नकारात्मक दृश्य

इस दुनिया में सभी अच्छे हैं परंतु

अगर नज़रिया नकारात्मक होगा तो दिखाई भी नकारात्मक पड़ेगा। एक मकान में दो परिवार रहते थे। एक पहली मंज़िल पर और दूसरा दूसरी मंज़िल पर। दूसरे परिवार की महिला अपने घर की खिड़की से पड़ोसी परिवार में देखती रहती थी। गैलरी में उनके सुखाये हुए कपड़े देखकर अपने पति को कहती थी कि इनके कपड़े कितने मैले हैं, ये लोग पता नहीं कौन-सा साबुन, सर्फ लगाते हैं, आप उनको पूछकर आओ। इस पर पति कुछ भी नहीं बोलता था। यह क्रम चलता रहा। एक दिन महिला को उनके कपड़े स्वच्छ दिखे तो अपने पति को कहने लगी, आज इनको अक्ल कैसे आई, लगता है, इन्होंने साबुन या सर्फ बदली किया है, आप पूछकर आओ। पति मुसकराया और धीरे से बोला, आज सवेरे-सवेरे मैंने अपने घर की खिड़कियों के कांच साफ किये हैं। यह सुनकर पत्नी चुप हो गई।

मन को दें सकारात्मक चिन्तन का खिलौना

कहने का तात्पर्य यह है कि जब अपनी खिड़की गंदी है तो दूसरे के कपड़े मैले नजर आते हैं। अपनी खिड़की साफ की तो वही कपड़े साफ नज़र आने लगे। दोष अपना होता है, दूसरे का नहीं। मन-बुद्धि को स्वच्छ करने के साधन हैं ईश्वरीय महावाक्य, मुरली। मुरली का एक-एक महावाक्य सकारात्मक सोच का स्त्रोत है। मुरली में आने वाले ड्रामा, कर्मगति, स्वमान, हर आत्मा का पार्ट अलग-अलग है – आदि-आदि प्वाइंट की स्मृति से मन-बुद्धि स्वच्छ रहेंगे और हम व्यर्थ संकल्प से मुक्त रह सकेंगे। **बरसात में, गाड़ी के सामने का कांच साफ करने के लिए बीच-बीच में वायपर चलाते हैं। ऐसे ही बुद्धि रूपी नेत्र को साफ रखने के लिए मुरली के प्वाइंट दिनभर में बीच-बीच में स्मृति में रहें जिससे स्वभाव-संस्कार की टक्कर से बचे रहेंगे। छोटे बच्चे के हाथ में चाकू होगा तो स्वयं का नुकसान कर बैठेगा। उससे चाकू खींचकर लेंगे तो भी जोर से पकड़ने के कारण अंगुलियाँ कट सकती हैं। अगर उससे चाकू लेना है तो उसके सामने दूसरा खिलौना डाल दें तब वह चाकू छोड़ देगा। मन भी नादान बच्चे की तरह है। सोचना उसका कर्म है। अगर व्यर्थ सोचता है तो अपना नुकसान कर बैठता है। इसलिए मन के सामने रोज़ सकारात्मक चिंतन रूपी खिलौना डालने से ही व्यर्थ संकल्पों के चाकू से स्वयं का बचाव होगा।** ❖

गरीबी हटाओ

राजबीर सिंह, फरीदाबाद

संसार में दो तरह की गरीबी है। एक है भौतिक गरीबी। इसका अर्थ यह है कि शरीर-निर्वाह के लिए आवश्यक रोटी-कपड़ा-मकान-शिक्षा-स्वास्थ्य कइयों को उपलब्ध नहीं हो पा रहा है। दूसरी गरीबी है आध्यात्मिक गरीबी। इसका अर्थ यह है कि आत्मा में ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियों का पूर्ण अभाव है। प्रथम गरीबी से तो 40-50% लोग ग्रसित हैं परंतु आध्यात्मिक गरीबी से तो सारा समाज, देश ग्रसित है। ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियों की गरीबी का परिणाम बड़ा भयंकर है। इनकी कमी के कारण ही मानव अपराध, व्यसन, कुरीतियों, हिंसा, लालच, विषय-वासना के चंगुल में फँसकर जीवन तड़प-तड़प कर गुज़ारता है।

अनुभव यह कहता है कि जब ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियों की गरीबी मिटे तो मानव में चारित्रिक और आत्मिक बल भरे और जब चारित्रिक और आत्मिक बल भरे तो भौतिक गरीबी स्वत: मिट जाये। प्रकृति और पदार्थ, आत्मबल और चरित्रबल के धनी व्यक्ति का अनुसरण करते हैं। इस अर्थ में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सभी केन्द्र गरीबी मिटाने के सशक्त माध्यम हैं। कोई भी वहाँ की नियमित शिक्षाओं को जीवन में धारण कर दोनों प्रकार की गरीबी से निजात पा सकता है। ❖

संपूर्ण सुख–शांति की यात्रा

● ब्रह्माकुमार मुकेश, वाराणसी

विश्व के इतिहास और संस्कृति में सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक यात्राओं की लंबी परंपरा रही है। इसमें गौतम बुद्ध, ईसा मसीह, वर्धमान महावीर, आदि शंकराचार्य, मुहम्मद साहब, गुरुनानक देव, स्वामी विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती और महात्मा गांधी जैसे लोगों ने लंबी-लंबी यात्रायें कीं और इन यात्राओं द्वारा उस समय के जन-जीवन में एक नई चेतना का प्रसार किया।

गौतम बुद्ध ने यात्रा के संदर्भ में कहा कि किसी सिद्धांत या विचारधारा के प्रचारक न हों तो वह सिद्धांत या विचारधारा मर जाती है। कोई भी सिद्धांत या विचार बहुत काल तक संसार में जीवंत रहे, इसके लिए प्रचारकों को तब तक यात्रा और प्रचार करना चाहिए जब तक कि उस सिद्धांत और विचार को मनुष्य जाति सहज रीति से स्वीकार करके जीवन में धारण करने लग जाए।

इन यात्राओं के उद्देश्यों को देखते हुए इन्हें अनेक नाम मिलते रहे हैं जैसे तीर्थ-यात्रा, पद-यात्रा, रथ-यात्रा, धर्म-यात्रा, विकास-यात्रा, स्वाभिमान-यात्रा, जनचेतना-यात्रा, आध्यात्मिक-यात्रा, सामुद्रिक-यात्रा, अंतरिक्ष-यात्रा, साहस-यात्रा आदि-आदि। इन यात्राओं से मानव-जाति को अनेक प्रकार के लाभ हुए, नये-नये स्थानों की खोज हुई, नई संस्कृति और सभ्यता का पता चला, नई भाषाओं का ज्ञान हुआ, नई प्रकार की जीवन-शैली का पता चला।

स्थूल यात्रा न सुरक्षित, न आरामदायक

आज की भीड़ भरी, प्रदूषण भरी, कोलाहल भरी दुनिया में पैदल या वाहन में यात्रा करना पहले की भाँति न तो सुरक्षित है और न आरामदायक। अनेक धार्मिक तथा राजनैतिक यात्राओं में फैलने वाली अफरा-तफरी के समाचार भी आये दिन समाचार-पत्रों में आते रहते हैं। व्यस्त ज़िन्दगी में से लंबा समय निकालना भी संभव नहीं हो पाता है और यात्राओं पर खर्च होने वाले धन और शक्ति को देखते हुए अनेक इच्छुक लोग भी मन मसोसकर बैठे रह जाते हैं, चाहते हुए भी नहीं जा पाते हैं। अनेक प्रकार की ज़िम्मेवारियाँ पूरी करने का बंधन भी कइयों के पाँव पीछे हटा देता है।

याद की यात्रा से मन होता है स्वच्छ

आज तो एक ऐसी यात्रा की ज़रूरत है जो बिना लाव-लश्कर के प्रत्येक मनुष्य के अंदर एक बदलाव का सूरज उत्पन्न कर दे। इसी उद्देश्य से हम सबके पारलौकिक माता-पिता परम प्यारे शिवबाबा, सारे जगत के उद्धार के लिए ब्रह्मा तन में अवतरित होकर एक ऐसी यात्रा सिखा रहे हैं जिससे संपूर्ण मानव जाति के साथ-साथ पाँचों तत्वों का भी कल्याण हो जाता है। यह यात्रा है याद की यात्रा, अंतर्जगत की यात्रा, आध्यात्मिक यात्रा अथवा संपूर्ण सुख-शांति की यात्रा। यह है मन द्वारा यात्रा। मानव-मन एक सेकेंड से भी कम समय में दुनिया के किसी भी छोर में, यहाँ तक कि दुनिया से पार ब्रह्मलोक में भी पहुँच सकता है। मन की इसी योग्यता को आधार बनाकर स्वयं परमात्मा पिता यह यात्रा सिखा रहे हैं। यदि हम राग के वशीभूत होकर संसार के विभिन्न कोनों में बैठे देह के संबंधियों में या पदार्थों में मन को भटका सकते हैं तो ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर परमधाम में विराजमान परमात्मा के पास इसे स्थिर भी कर सकते हैं। संसार में भटकने से मन मैला और कमज़ोर होता है, वहीं ईश्वर पिता के समीप जाने से स्वच्छ और शक्तिशाली बनता है।

चेतन शिवालय की यात्रा

यह यात्रा बेहद की यात्रा है। इसके लिए स्थूल वाहन का, निश्चित समय का, धन के खर्च का, किसी साथी के पास होने का, शरीर के स्वस्थ होने का कोई बंधन नहीं है और प्राप्ति बड़ी भारी है। जड़ तीर्थों की भेंट में यह चेतन शिवालय की यात्रा है जहाँ भगवान शिव चेतन रूप में विराजमान

हैं और आत्माओं को अपने सान्निध्य की अनुभूति से आनन्द और शक्ति प्रदान करते हैं। इसे राजयोग की यात्रा भी कह सकते हैं। यह केवल इसी समय सीखी और की जा सकती है। इस यात्रा के द्वारा मनुष्य की जन्म-जन्मांतर की थकान दूर हो जाती है। यह यात्रा आत्मा के अंदर अनेक शक्तियों और खज़ानों को भरकर उसे संपूर्ण सतोप्रधान बना देती है।

वर्तमान समय अनेक मनुष्यात्मायें इस अलौकिक यात्रा द्वारा अपने जीवन को संपूर्ण सुख और शांति से भरपूर कर रही हैं। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के द्वारा परमपिता परमात्मा शिव बाबा, संपूर्ण सुख और शांति की इस यात्रा की सभी आत्माओं के लिए नि:शुल्क व्यवस्था कराके, मुक्ति और जीवनमुक्ति का श्रेष्ठ भाग्य प्रदान कर रहे हैं। इसमें आप भी सादर आमंत्रित हैं। यह भी याद रहे, समय कम है इसलिए शीघ्र अतिशीघ्र इस यात्रा का लाभ उठायें। ❖

जान गया हूँ अपने दोषों को

● **ब्रह्माकुमार शिवप्रकाश मोदी, कोलकाता**

जाना था छत पर, हड़बड़ी में नीचे जाने वाली लिफ्ट में चढ़ गया। तुरंत अपनी भूल का अहसास हुआ। मंज़िल पाने के लिए सही रास्ते की पूछताछ की, देरी हुई, अपनी अज्ञानता का बोध हुआ। परंतु कई बार, सोच-समझ कर गलत तरीकों से, तुरंत लाभ प्राप्ति के लिए जो कार्य किया, उसमें असफल होने पर व धोखा खाने पर दूसरों को जिम्मेदार ठहराया व अपने भाग्य को कोसा। सभी निर्णय मेरे, फिर दोषी कभी भाग्य, कभी व्यक्ति क्यों? यह कैसा विरोधाभास?

अनजाने में गलती हुई तो स्वयं को दोषी माना। सोच-समझ कर (नकारात्मक विचारों से) गलती की तो अपने को सही और दूसरे को दोषी माना या भगवान पर दोष लगाया। ज़िन्दगी की दौड़ में तुरंत हासिल करने के चक्कर में, सब कुछ समझते हुए भी फैसले नकारात्मक सोच के आधार पर लेने के अभ्यस्त हो गये हैं व दोष दूसरों पर मढ़ते हैं। फिर आपसी प्रेम का प्रश्न कहाँ?

पुराने जमाने में भी लोग संपन्न हुए हैं। कपड़े के व्यापार में, बारदाने के व्यापार में समय बहुत लगता था, नैतिक मूल्यों के आधार पर फैसले करते थे। संतुष्ट थे, आपस में प्रेम था। उन्होंने कभी अपने भाग्य को नहीं कोसा। सद्गुणों पर चल हमेशा भगवान का साथ महसूस करते थे। आज भी सुख-शांति स्वयं के विचारों में परिवर्तन से संभव है। हर एक में समझ है, जरूरत है मूल्यों पर चलने की। यह सोचना कि आज की दुनिया में सकारात्मक विचारों से चलना धारा के विपरीत चलने के समान कठिन है तो यह मानसिक कमजोरी भर है।

सच्ची राह पर चलने का दृढ़ निश्चय करते ही परमात्मा सहायता के लिए हर पल तैयार है। आत्मस्थिति में टिक परमात्मा की याद में समाते ही सर्वशक्तिमान की सर्वशक्तियों से आंतरिक शक्तियाँ पुन: जागृत होने लगती हैं जिनके सहारे जीवन की डगमगाती डगर स्थिर हो जाती है। अब मंज़िल पर पहुँचना व भाग्य बनाना दोनों का अर्थ एक ही लगता है और अब कोई विरोधाभास भी नहीं है क्योंकि मैं अपने दोषों को जान गया हूँ।

विचारों की समानता होने से संबंधी-मित्र भी अपने साथी लगते हैं। ठीक इसी प्रकार, सकारात्मक विचारों के होने से भगवान साथी महसूस होते हैं। ❖

भोग से आत्मा का शोषण होता है
त्याग से आत्मा का पोषण होता है

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष..

नारी तू नारायणी

● ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

जिस प्रकार कोई भी पक्षी एक पंख से नहीं उड़ सकता, उसी प्रकार कोई भी समाज या देश स्त्री या पुरुष – दोनो में से किसी एक वर्ग के द्वारा उन्नत नहीं हो सकता। नर-नारी में यदि कुछ भिन्नताएं हैं तो भी वे एक-दूसरे की विरोधी न होकर पूरक ही हैं। भारतीय संस्कृति में इस पारस्परिक पूरक स्वरूप को विष्णु चतुर्भुज तथा महालक्ष्मी के रूप में दिखाया जाता है। चतुर्भुज तथा महालक्ष्मी की चार-चार भुजाएं क्रमश: नारी और नर की दो-दो भुजाओं का सम्मिलित रूप ही हैं।

आत्माओं में लिंग-भेद नहीं

महिला की उत्पत्ति न तो पुरुष के पैर से हुई है जो वह उसके द्वारा शासित होती रहे और न उसके सिर से हुई है जो उस पर शासन करे। दोनों शरीरों की उत्पत्ति एक ही नारी के गर्भ से होती है। आत्मा रूप में उत्पत्ति का सवाल ही नही हैं क्योंकि आत्मा अनादि-अविनाशी है। लिंग-भेद भी शरीर आधारित है वरना आत्मा तो लिंग रहित है। कुछ आत्माएँ पुरुषों की हों और कुछ आत्माएँ स्त्रियों की हों, ऐसा कोई भी भेद या विभाजन नहीं है। सभी आत्माएँ बारी-बारी नारी चोला या नर चोला धारण करती हैं।

दोनों का विकास जरूरी

क्या हम शरीर की आँखों में भिन्नता कर सकते हैं कि दायीं आँख श्रेष्ठ है, बायीं नहीं या बायीं श्रेष्ठ है, दायीं नहीं। दोनों ही श्रेष्ठ हैं, दोनों का कार्य एक ही है। दोनों से मिलकर शरीर की सुन्दरता बनती है और दोनों के सहयोग से ही देखने की प्रक्रिया पूर्ण होती है। एक आँख वाला व्यक्ति काना कहलाता है, इसी प्रकार स्त्री या पुरुष दोनों में से यदि एक वर्ग का भी सही विकास न हो तो समाज और देश

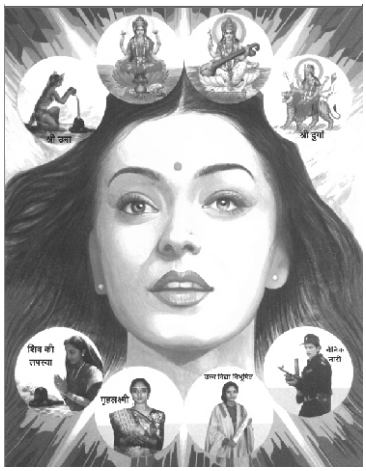

भी काना बन जाता है ।

रक्षणीय हैं पर उपेक्षणीय नहीं

भारत के धर्मशास्त्रों में नारी को नर की अर्धांगिनी कहा गया है। स्कन्द पुराण में लिखा है, 'य देवोयो यच्च...भर्तृशुश्रूषयैव।।' इसका अर्थ है कि पति जो कुछ भी दान, सेवा, सत्कार और धर्म-पुण्य आदि करता है उसका आधा फल बिना प्रयास स्त्रियों को मिल जाता है क्योंकि अर्धांगिनी जो है वह। निर्णयामृत में लिखा है, भार्या पत्युर्व्रतं कुर्यादि भार्यायाश्च पतिर्व्रतम्" यानि पत्नी, पति के लिए व्रत करे और पति, पत्नी के लिए। **हमारे पूर्वजों ने नारी को अर्धांगिनी कहा, इसका यह तात्पर्य कहीं भी नहीं है कि पति उसके मौलिक गुणों का अपकर्षण करे, उसकी उन्नति में बाधक बने, उसकी सद् इच्छाओं का उन्मूलन करे, उसे पददलित करे, असहाय छोड़ दे, उसे आध्यात्मिक या धार्मिक उन्नति से वन्चित कर दे और सात तहों में ढककर रखे। यदि कोई ऐसा करता है तो स्वयं आधे अंग को कमज़ोर बनाता है। नारियाँ रक्षणीय अवश्य हैं परन्तु उपेक्षणीय या शोषणीय नहीं हैं।**

जब तक शरीर के दोनों अंग (दो आँखें, दो हाथ, दो पाँव, दो कान आदि) मिलकर काम करते हैं तो कोई समस्या नहीं परन्तु किसी भी आधिक, दैविक, भौतिक विपत्ति के कारण यदि दो में से एक अंग खराब हो जाए, असहयोगी हो जाए तो दूसरे (चाहे दायां चाहे बायां) में दोनों के बराबर कार्य करने की शक्ति आ जाती है। यदि न भी आए तो कम से कम उसके अभाव को भरने की तो शक्ति आ ही जाती है। इसी तरह परस्पर पूरक होते हुए भी नारी और नर एक-दूसरे के पराधीन नहीं हैं। एक के न रहने पर दूसरा, दोनों के

बराबर कार्य कर दिखाता है, उसे दूसरे के अभाव को भरते देखा गया है। शिवाजी के पिता द्वारा उपेक्षित शिवाजी की माँ ने उसे महान शूरवीर और चरित्रवान बना दिया और पितृप्रेम से वंचित ध्रुव को उसकी मां ने महान ईश्वर-भक्त बना दिया।

गृहस्थ आश्रम सबसे बड़ा क्यों?

गृहस्थ आश्रम को अन्य सभी आश्रमों (ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास) से बड़ा माना गया है, क्यों? क्योंकि शेष तीनों आश्रमों का भरण-पोषण इसी के द्वारा होता है । इसलिए भारत में प्राचीन काल से गृहस्थीजन कुल कमाई का 10 प्रतिशत दान-पुण्य में लगाते रहे हैं। प्रजापिता ब्रह्मा भी अपने लौकिक जीवन में नियमपूर्वक धर्मार्थ 10वां हिस्सा निकालते थे। अत: सच्चे अर्थों में गृहस्थ भी एक तपोवन है जिसमें जीवन तपस्यामय है। हर प्रकार की परस्थितियों से तालमेल, सेवा, परोपकार, धर्म, परमार्थ मार्ग पर चलते हुए त्याग, सहनशीलता, धैर्य, जागरूकता तथा दूरदर्शिता को अपनाकर घर को सुखी बनाया जा सकता है।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण से नारी की श्रेष्ठता

यदि आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो नारी पुरुष की अपेक्षा श्रेष्ठ सिद्ध होती है क्योंकि परमात्मा को परमपुरुष रूप में स्मरण कर, स्वयं को उनकी प्रेमिका समझ, उनका प्रेमालिंगन पा लेना उसके लिए बहुत सहज है। परन्तु **नर को परमपुरुष के प्रेमालिंगन को पाने के लिए नारी बनना पड़ता है और पौरुषीय गर्व का परित्याग करना पड़ता है। हालांकि देह का अभिमान दोनों को ही छोड़ना पड़ता है, आत्मस्वरूप में दोनों को ही टिकना पड़ता है, फिर भी परमपुरुष के समक्ष सर्वस्व सर्मपण करना नारी के लिए स्वभावानुसार सहज ही रहता है। पुरुष में जब महिला के गुण आ जाते हैं तो वह महात्मा बन जाता है।**

प्राचीन काल में कन्या, पुत्रसमान

प्राचीन काल में कन्या का लालन-पालन पुत्र के ही समान होता था। यादगार शास्त्र रामायण में लिखा है कि जब राजा जनक ने सीता को गोद में उठाया था तो अनुभव किया था कि उनके जैसा सुखी व्यक्ति संसार में दूसरा नहीं। अन्य पौराणिक नारियाँ जैसे पार्वती, सावित्री, दमयन्ती , द्रौपदी आदि भी जिन राजघरानों में जन्मीं, उनमें पुत्र भी हुए होंगे पर इनके लालन-पालन पर इतना अधिक ज़ोर दिया गया कि स्मृति में यही रह गयी हैं।

भारतीय महिलाओं के बुरे दिन

सतयुग और त्रेतायुग में उच्च स्थान प्राप्त नारी, वैदिक काल में भी सम्मानित थी। परन्तु, विदेशी शासन अपनी अलग रूढ़ियाँ लेकर आया और भारतीय स्त्रियों के बुरे दिन आए। उनका आसन पीछे लगने लगा और उनकी स्थिति घटते-घटते एक चल सम्पति के समान हो गई। धीरे-धीरे ऐसा समय भी आया कि महिला के साथ पालतू जैसा व्यवहार भी होने लगा। वैवाहिक जीवन में पुरुष तो देवता बन बैठा पर उस बिचारी को इतना भी अवसर नहीं दिया गया कि वह सही अर्थों में पुजारिन बन सके। वह पैर की जुत्ती और घर की मज़दूरिन समझी जाने लगी। स्वाधीनता समाप्त हो गई । जैसे मृतक के कपड़े जला दिए जाते हैं, पति की मृत्यु के बाद वह भी उसके वस्त्रों की तरह, उसके साथ जलाई जाने लगी। कई समाज सुधारकों के अथक प्रयास से इस स्थिति से नारी उबरी। आज उसे संविधान से सारे अधिकार प्राप्त हैं परन्तु फिर भी मानसिकता के न बदलने के कारण अधिकांश स्थानों पर उसे कानूनी अधिकारों से वंचित रहना पड़ता है। कन्या भ्रूण-हत्या, नारी दहन, दहेज प्रताड़ना, लिंग-भेद, कुदृष्टि आदि आज भी उसकी पराधीनता की कहानी कह रहे हैं। **विज्ञान भले मंगल की ओर है परन्तु संकीर्ण विचारों के कारण बहका मानव अभी भी जंगल की ओर ही है।**

कन्या अपना भाग्य लेकर आती है

कहावत है, पुत्र पिता के भाग्य से जीता है परन्तु कन्या अपना भाग्य लेकर संसार में आती है। जिस भी स्थान, देश, काल में नारियों का अपमान, उपेक्षा, अवनति होगी वहाँ-वहाँ नारियों के हृदय की आहें प्रकृति में प्रतिध्वनित होती हैं। सृष्टि के समूचे

वातावरण पर इसका प्रभाव पड़ता है। इन्हीं कारणों से प्राकृतिक आपदाओं आदि के रूप में विनाश का सिलसिला प्रारम्भ होता है। इसलिए किसी भी देश-प्रदेश, समाज, जाति, परिवार व घर में खुशहाली, समृद्धि, प्रगति, शान्ति व स्वास्थ्य का मूलमंत्र यही है कि नारी का देवी के समान आदर-सम्मान हो, उसे उसके नारायणी स्वरूप का साक्षात्कार करवाया जाए, उसे आत्मस्वरूप को जागृत करने वाली शिक्षा दी जाए।

सुषुप्त देवत्व को उभारें

आज यदि पुरुष वर्ग दुखद स्थिति में है तो उसका मूल कारण कहीं न कहीं मातृशक्ति का तिरस्कार और उसके प्रति अन्याय, पक्षपात ही है। नर को अपने चरित्र, आचरण और व्यवहार का प्रतिफल ही नारी से मिलता है। अत: नारी के दैवी स्वरूप की महत्ता को जानने और उसे विकसित करने से ही कल्याण हो सकता है। नारी भी मात्र चमड़ी को चमकाने के धन्धे में न लगी रहे, वह स्वयं को आत्मा समझ अपने सुषुप्त देवत्व को उभारे तो पुरुष वर्ग स्वत: सम्मान प्रदान करेगा।

विवाह का उद्देश्य है योग न कि भोग

यदि विवाह एक आध्यात्मिक और दैवी संबंध है तो यह दो आत्माओं का मिलन भी है जिसका प्रधान उद्देश्य योग है न कि भोग। अध्यात्म कहता है, मानव जीवन भोग प्रधान नहीं, योग प्रधान है। **जो नर-नारी गृहस्थ में रहते भी परमात्मा को अपने बीच में रखते हैं, वे ही परम सौभाग्यशाली हैं। जब 'काम कटारी' अपने बीच में रखते हैं तो उपलब्धियाँ शून्य हो जाती हैं। यह कटारी सुख-शान्ति तथा उन्नति को काट डालती है और जब राम को बीच में रखते हैं तो उपलब्धियाँ 101 गुणी हो जाती हैं। राम का संग 100 गुणा क्या, पद्मगुणा सुख प्रदान करता है।**

आत्मा के सभी नाते परमात्मा से

सृष्टि रंगमंच पर शरीर रूपी कपड़ा पहनकर हम विभिन्न पार्टधारियों के साथ अलग-अलग पार्ट बजाते हैं, भिन्न-भिन्न रिश्तों से जुड़ते हैं परन्तु शरीर से परे आत्मा के सभी नाते एक परमात्मा के ही साथ हैं। इसलिए हम कहते हैं, 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव....सर्व मम देव-देव।' रंगमंच पर पार्ट बजाते हुए हो सकता है, किसी नारी का पार्ट पत्नी रूप में न हो या एक बार मिलकर फिर पति छिन जाए, किसी माता को पुत्र मिले ही न या मिलने के बाद वह वंचित हो जाए पर परमात्मा रूपी पति या पुत्र को कोई नहीं छीन सकता। कोई भी आत्मा परमात्मा के साथ किसी भी संबंध का सुख लेने से किसी भी काल या स्थान पर वंचित नहीं की जा सकती । इसलिए पति, पिता, पुत्र के अभाव में स्वयं को दुर्भाग्यशाली मानने के बजाए परमात्मा में वह भाव स्थापित करके पद्म भाग्यशाली बनने का अनुभव कीजिए।

परमात्मा का संग है तो भय नहीं

समय की बहती धारा में सब सम्बन्ध बह जाते हैं परन्तु अन्तकाल तक परमात्मा पिता ही साथ निभाता है और परलोक में भी किरणों रूपी बाँहें पसारे स्वागत करता है। जैसे पति के साथ रहने पर परपुरुष आँख उठाकर भी नहीं देख सकते ऐसे ही परमात्मा के संग रहने पर कोई भय आँख उठा नहीं सकता। शरीर के साथी, शरीर के जलते ही साथ भुला देते हैं परन्तु आत्मा का सच्चा साथी परमात्मा, देह-आवरण उतर जाने पर आत्मा के और ज्यादा करीब आ जाता है।

ज्ञान-दर्पण की सौगात

नारी में दर्पण देखने का स्वाभाविक संस्कार होता है, ज्ञान-दर्पण में झांकने का संस्कार भी स्वाभाविक बना लीजिए। अब स्वयं परमात्मा परमधाम से ज्ञान रूपी दर्पण की सौगात हम सभी को दे रहे हैं जिसमें बहुत सहज रीति से अपना स्वरूप दिन में कई-कई बार निहारा जा सकता है। चित्त को बेदाग हीरे जैसा बना लीजिए ताकि भगवान आपको लक्ष्मी जैसा शारीरिक परिधान पहनाकर संसार को दिखा सके कि नारी जब तन-मन से दिव्य अर्थात् नारायणी बने तो संसार स्वर्ग बन जाए। ❖

मैं धन्य–धन्य हो गई

● ब्रह्माकुमारी जमीला, आबू रोड (बी.के.कालोनी)

वह सुहावना दिन था 7 सितंबर, 2003 का जब मैंने शांतिवन की पावन भूमि पर पाँव रखा। सुखद शांति के गहन प्रकंपन अंतर्मन की गहराइयों को छू रहे थे। ध्यान-कक्ष में गई, आँखों से अविरल अश्रुधारा बहने लगी। महिला प्रभाग के सेमीनार में हम तीन दिन के प्रवास में आये थे मगर समझ नहीं आ रहा था कि जब भी तपस्याधाम जायें या कहीं भी बाबा के कमरे में बैठें, आँसुओं की बाढ़ क्यों आ जाती है। किसी ने कुछ कहा नहीं, कुछ बात नहीं मगर आँसू रुकने का नाम ही नहीं ले रहे हैं। निमित्त टीचर से पूछा, दीदी, आप हमें कौन-सी जगह ले आईं, हमें आँसू क्यों आ रहे हैं? उसने बताया, आप पाँच हज़ार साल बाद अपने प्यारे पिता परमपिता से मिली हो इसलिए ये मिलन के आँसू हैं। उस समय समझ में नहीं आया कि पाँच हज़ार वर्ष क्यों बोल रहे हैं मगर अंदर से गहन शांति की अच्छी अनुभूति हो रही थी।

खान-पान में परिवर्तन

सेमीनार के बाद हम लौटने लगे, टीचर बहन ने यात्रा-भोजन साथ लेने की बात कही। मैंने सोचा, सिर्फ तीन घंटे का उदयपुर का रास्ता है, इसके लिए बहनों को क्यों तकलीफ दूँ। उनके बहुत आग्रह के बावजूद भी मैंने यात्रा-भोजन स्वीकार नहीं किया। आबू से उदयपुर की यात्रा में रास्ते में कुछ भी खाया-पिया नहीं। वैसे तो होटल में कहीं भी, कुछ भी खा-पी लेते थे मगर उस दिन कुछ भी खाने-पीने की इच्छा नहीं हुई। घर पहुँचे तो फ्रिज खोला, मांसाहारी पदार्थ रखे हुए थे। देखकर उल्टी होने जैसा महसूस हुआ। मम्मी ने आग्रह किया, कुछ तो खा ले मगर अपने आप ही, बिना किसी आंतरिक पुरुषार्थ के गिलास तक भी छूने से परहेज़ हो रहा था। मैंने बीमारी का बहाना बनाया और बहन ने जो प्रसाद का पैकेट दिया था वही स्वीकार कर लिया। इस प्रकार शांतिवन में किये सेमीनार का यह फल निकला कि पहले दिन से मांसाहार, लहसुन, प्याज आदि छूट गये। परमात्म शक्ति इतनी प्रबल होती है जो बिना कहे जीवन में परिवर्तन आ जाता है।

धारा प्रवाह ज्ञान सुनाया

इसके बाद हम इंदौर पहुँचे। साकेत सेवाकेन्द्र की निमित्त बहन ने पूछा, आपने शांतिवन में क्या सुना? हमारे अंदर से जैसे टेपरिकार्डर चल पड़ा। आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र का ज्ञान हम धाराप्रवाह सुनाने लगे। दीदी ने कहा, आपको सात दिन के कोर्स की ज़रूरत नहीं, आप सीधा

मुरली क्लास में शामिल हो सकते हो। मुरली क्लास में बैठे तो मुस्लिम होने की वजह से मुरली सिर के ऊपर से गुज़रने लगी। कुछ भी समझ में नहीं आता था। लक्ष्मी-नारायण, सतयुग, नर्क, ब्रह्मा – हमें इनसे क्या लेना-देना! एक-दो दिन तो मुरली क्लास में आये फिर बंद कर दिया।

मुरली सुनने का नियम बनाया

घर से 12 कि.मी. दूरी पर सेन्टर था। कांग्रेस पार्टी में नेता पद पर होने के कारण और अन्य कई व्यस्तताओं के कारण प्रतिदिन मुरली क्लास में जाना मुश्किल पड़ रहा था और मुरली समझ में भी नहीं आ रही थी। जब दो-तीन दिन नहीं गये तो निमित्त बहन का फोन आने लगा, आप मुरली क्लास में क्यों नहीं आये? मैंने सोचा, यह तो सिरदर्द पाल लिया है, नहीं जाओ तो इन दीदियों का फोन आ जाता है, काम की भी इतनी व्यस्तता है परंतु बहनों का रोज़ का फोन का तकाजा भी ठीक नहीं। हमने एक नियम बनाया

कि सुबह 4 बजे उठो, 5 बजे से 6 बजे तक इनकी मुरली सुन लो फिर दुनिया के कारोबार में लग जाओ ताकि रोज़ का इनका फोन का झंझट खत्म हो जाये। हमारी वजह से बहनों के संकल्प चलें, यह भी नहीं होना चाहिए।

अल्पबुद्धि का निर्णय

एक बार मुरली में आया, देह सहित देह के सब संबंधों को भूल मामेकम् याद करो। अपनी अल्पबुद्धि से हमने तुरंत निर्णय लिया और सर्व संबंधों से दूर हो जाने की ठान ली। फोन का नंबर बदल लिया जिससे फोन आने बंद हो गये। नेता पद से छह महीने के लिए छुट्टी ले ली, कारोबार बंद कर दिया। सेन्टर के नज़दीक घर किराये पर ले लिया। चार मास तक देह सहित देह के सब संबंधों को छोड़ हम तपस्या में लग गये। ब्रह्माकुमारीज़ की सीडी, कैसेट, किताबें खरीद लीं और समझने लगे कि यह है क्या क्योंकि ज़िन्दगी में इतना सुकून कभी नहीं मिला था जितना बाबा के सेन्टर पर महसूस हो रहा था।

छोड़ना नहीं, परमात्म प्यार में खोना है

उस समय दुनिया से स्थूल रूप से एक प्रकार से हम कट गये थे क्योंकि 40 लाख की आबादी वाले इंदौर शहर में मकान और फोन नंबर बदलने के बाद कोई मुझे ढूँढ़ नहीं सकता था अत: मुरली क्लास की गहराई में जाकर, साहित्य में डूबकर, सीडी सुनकर इस ज्ञान को अच्छी तरह समझने लगे। चार महीने बाद हमने निमित्त टीचर बहन को सारी बात बताई। तब टीचर बहन ने समझाया, **बहन, किसी से संपर्क, मिलना-जुलना थोड़े ही छोड़ना है। यह तो बुद्धि से परमात्म-प्यार में खो जाना है। उन्होंने कहा, सभी को फोन करो। तब हमने घर पर पापा, मम्मी, पति सबको फोन किया, अपना नया नंबर दिया। इस प्रकार हम ईश्वरीय ज्ञान में चल पड़े।** अक्टूबर में दीवाली पर तीनों बच्चों सहित आबू आये। आबू पावन भूमि में पाँव रखते ही बच्चे भी ईश्वरीय ज्ञान को समझ गये और अनुसरण करने लगे। साल भर बाद हम आबू आकर रहने लगे।

मुझे मेरा बाबा मिल गया

बाद में मेरा एक भाई ज्ञान सरोवर आया, फिर दूसरा आया, इस प्रकार पूरा परिवार आबू आता रहा। उन्हें तसल्ली हो गई कि मैं अच्छी जगह सेवा कर रही हूँ। मैंने बुरहानुद्दीन और फातिमा दोनों बच्चों को बाबा की सेवा में लगा दिया है। आज नहीं तो कल शेष परिवार को भी अल्लाह के पास आना ही है। मैं भी परमात्म-सेवा में लगी हूँ। अब मुझे कुछ नहीं चाहिए। मुझे मेरा बाबा मिल गया। मैं धन्य-धन्य हो गई। तन, मन, धन, श्वास, संकल्प सफल हुए, यही मेरा अहो सौभाग्य है। मैं सभी से अर्ज़ करती हूँ, आबू में अल्लाह अपने वायदे के मुताबिक आ चुका है। आकर अपना अविनाशी सुख, शान्ति का वर्सा ले लो। अभी नहीं तो कभी नहीं। ❖

समय की पुकार

ब्रह्माकुमार त्रिलोचन शर्मा, रोहतक

जाग मनुष्य वक्त जा रहा,
हुआ दुखमय संसार है।
नहीं भरोसा पल भर का भी,
गर्दन पर लटकी तलवार है।

अपने-पराए के चक्कर में
जीवन सारा बिता दिया।
लोभ-स्वार्थ के कारण,
जाल माया का बना दिया।
अपनी इच्छाओं में घिरकर
जीवन को कहां डूबो दिया?
फिर से खुशियाँ लाने को
जन-जन को करना तैयार है।
जाग मनुष्य.....

आज खिवैया खुद बना खुदा है,
क्यों हो गया तू उससे जुदा है।
पैसे से नहीं मिटी क्षुधा है,
छूट, क्यों विकारों से बंधा है?
पार कर भव सागर को,
कश्ती पे हुआ प्रभु सवार है।
जाग मनुष्य.....

देना ही लेना है

● ब्रह्माकुमार दत्ता, भूम (उस्मानाबाद)

पिछले 63 जन्मों से हम मनुष्यात्मायें किसी न किसी से कुछ न कुछ माँगती ही आई हैं। जड़ मूर्तियों के आगे जाकर हमने सुख-शांति की माँग की, मनुष्यों से हमने स्नेह और सम्मान माँगा। माँगते रहने के बावजूद भी हमें ये सदा के लिए नहीं मिले। **माँगते-माँगते हमारी माँगने की आदत पक्की हो गई और हम एक छोटी-सी बात भूल गये कि मिलता देने से है, माँगने से नहीं।** आजकल तो मनुष्यों का सिद्धांत रहता है, माँगने से नहीं मिलता तो छीन लेना ही सही। आज संसार में मनुष्य माँगता कम है और छीनता ज्यादा है। लेकिन इस छीना-झपटी के माहौल में वह कर्म का सिद्धांत भूला हुआ है। इसलिए ही मनुष्य के अपने जीवन से भी सुख-शांति-आनंद-प्रेम छीना जा रहा है। वह सोच रहा है, मेरे जीवन में सुख नहीं है, तो मैं औरों को भी सुखी नहीं होने दूँगा लेकिन इससे तो वह अधिक दुखी ही होता जा रहा है।

सुखी है देने वाला, लेने वाला नहीं

बाबा ने हम बच्चों को पाठ पढ़ाया है – माँगने से मरना भला। बाबा ने हमें देने वाले, महादानी, वरदानी बनाया है। देना सिखाया है, लेना नहीं। हमें अब अपने अंदर दातापन के संस्कार भर लेने चाहिएँ। सुखी देने वाला रहता है, लेने वाला नहीं। मान-सम्मान दाता को मिलता है, माँगने वाले भिखारी को नहीं। भगवान सबसे बड़ा दाता है इसलिए सारा संसार उसे याद करता है, उसके गुणगान करता है। अब बाबा चाहता है कि मेरे बच्चे भी ऐसे महान दाता बन जायें। इसके लिए वह हमें भी अपने जैसा महान दाता बनने की शिक्षा दे रहा है।

भक्त और इष्ट सामने – कल्प में एक बार

अंतिम समय में जब प्रत्यक्षता का दृश्य चल रहा होगा तब भक्त आत्मायें अपने-अपने इष्ट को स्पष्ट रूप से देखेंगी। उनके नयनों द्वारा वरदानों की प्राप्ति करेंगी। बड़ा सुंदर दृश्य होगा वह। कल्प में केवल एक बार घटने वाला दृश्य, भक्त और इष्ट एक-दूसरे के सामने! ऐसे समय पर इष्ट द्वारा भक्त आत्मायें जो भी वरदान प्राप्त करेंगी, वही उनमें फिर संस्कार रूप में समा जायेंगे। द्वापर से वे फिर उसी के आधार पर अपने-अपने इष्ट को पुकारना प्रारंभ करेंगी। कल्प में केवल एक बार भक्त, सम्मुख आकर अपने इष्ट द्वारा वरदान प्राप्त करते हैं जिसे वे कल्पभर नहीं भूलते हैं। स्वयं भगवान रोज हमारे सम्मुख आकर वरदानों का खज़ाना लुटाते हैं, फिर भी हम उन्हें याद नहीं रखते। अंत में वरदानी आत्मायें वे बनेंगी जो अभी वरदाता द्वारा प्राप्त वरदानों को अपना निजी संस्कार बना लेंगी, उन्हें प्रत्यक्ष रूप में जीवन में समा लेंगी।

प्रकृति की पालना का रिटर्न दें

आज के संसार में भी मनुष्य उसे ही याद करते हैं जिसने इस संसार को कुछ न कुछ दिया है। **मनुष्य उसका नाम भी नहीं सुनना चाहते जिसने औरों से छीना है। सारे कल्प में हमने भी प्रकृति और आत्माओं से बहुत कुछ लिया है। अभी समय है इस हिसाब को चुक्तू करने का। हमने प्रकृति से इतना सुख भोगा है कि आज यह भी खाली हो गई है। एक माँ की तरह प्रकृति ने हमें सृष्टि के आदि से लेकर पालना दी है। अब हमारा फर्ज बनता है कि इस पालना का उसे रिटर्न दें, उसे इतना भरपूर करें कि फिर से आने वाले सतयुग से वह हमें सब सुखों से भरपूर करने के लिए तैयार हो जाये।**

सब बाबा का दिया है

रहीम के बारे में कहते हैं कि वे बड़े दानी थे। जब भी किसी को दान देने के लिए हाथ बढ़ाते थे तो उनकी आँखें नीचे झुक जाती थी। इस पर किसी ने उन्हें पूछा, तुम ऐसा क्यों करते हो कि दान देते समय लेने वाले की सूरत भी नहीं देखते कि मैं किसे दान कर रहा हूँ। तब उन्होंने कहा, देखो, देने वाला तो वह है लेकिन इन

लोगों को कहीं ऐसा भ्रम न हो जाये कि मैं दे रहा हूँ, इसलिए मैं अपनी आँखें झुका लेता हूँ। ऐसे ही हमें जो कुछ भी मिला है चाहे ज्ञान हो, चाहे शक्तियाँ हों या गुण वा विशेषतायें, सब बाबा का ही दिया हुआ है। बाबा ने तो हमें संसार की सबसे अमूल्य पूंजी दी है और वह भी इतनी भरपूर मात्रा में कि सारे संसार को भी बाँटो तो भी खुटेगी नहीं, बढ़ती ही जायेगी।

धारणा में बड़े बनें

हम विश्व की महान आत्माये हैं क्योंकि हमारा कनेक्शन डायरेक्ट भगवान से है। हम प्रत्यक्ष प्रभु की पालना में पल रहे हैं। हमारा कर्त्तव्य बनता है कि हम भी दूसरों को पालना दें। पालना देने के लिए कोई स्थूल रीति से बड़ा होने की आवश्यकता नहीं बल्कि ज्ञान और गुणों की धारणा में बड़े बनें। छोटी होते हुए भी सबने मम्मा को अपनी माँ स्वीकार कर लिया और मम्मा ने भी माँ की भाँति ही पालना दी। तो हमें बस देना सीखना है। वाणी अच्छी है और ज्ञान का खज़ाना भरपूर है तो वाणी से ज्ञानदान करें। धारणा अच्छी है तो अपने कर्मों से गुणों का दान करें। कोई वाणी से ज्ञान न भी सुना सके या शरीर के कमजोर होने के कारण कहीं आ-जा भी न सके तो भी मनसा से तो अपनी शक्तियों का, शांति का दान कर सकते हैं।

वरदानी मनसा सेवा करता है

महादानी वाणी से सबको प्रभावित करेगा। उसकी सेवा वाचा से ज्यादा और मनसा से कम होगी लेकिन जो वरदानी है, उसकी सेवा मनसा से ज्यादा होगी। वह वाणी में कम आयेगा। मनसा द्वारा शुभ संकल्पों की किरणों का दान देना यह पावरफुल और निश्चित रूप से फल देने वाली सेवा है। बाबा हम बच्चों को ऐसे वरदानी बनाना चाहते हैं। वरदानी ही सही अर्थ में विश्वकल्याणी हैं। पावर हाऊस की तरह वे एक जगह होते हुए भी सारे विश्व को शक्ति और शांति की करंट पहुँचाते रहते हैं। ऐसी वरदानी आत्मायें ही मायाजीत, प्रकृतिजीत, विकर्माजीत बनती हैं और जो भी उनके संग में आते हैं उनको भी ऐसा वरदानी बनने की प्रेरणा देती हैं। ❖

धैर्य की महिमा

ब्रह्माकुमारी राजरानी, इलाहाबाद

महर्षि मनु के अनुसार धैर्य, धर्म का प्रथम व महत्त्वपूर्ण लक्षण है। धैर्य का अर्थ है धीरता, सहिष्णुता, स्थिरता और सहनशीलता। मन की शान्त स्थिति का नाम धैर्य है। विषम एवं प्रतिकूल परिस्थितियों के उत्पन्न होने पर भी मन में चिन्ता, शोक, व्याकुलता, क्षोभ और चंचलता के लक्षण उत्पन्न न होना धैर्य है। धैर्य से इन पर नियन्त्रण किया जा सकता है। धैर्य छोड़कर व्यक्ति पतन के गर्त में जा गिरता है। सन्त तुलसीदास जी ने कहा है –

धीरज, धर्म, मित्र अरु नारी।
आपतकाल परखिए चारी।।

धैर्य धारण करना एक तप है। कहावत भी है, सहज पके सो मीठा होये। पृथ्वी को धरणी कहा जाता है। माँ को भी धैर्य की प्रतिमा कहा गया है क्योंकि माँ सहनशील होती है। धैर्य ही बुद्धि के विकास का सूचक है। धैर्य ही साहस व दृढ़ता का प्रतीक है। धैर्य व्यक्ति के विकास की प्रथम सीढ़ी है। धैर्य ही सही मार्ग चुनने का अवसर प्रदान करता है। कहा गया है, उतावला सो बावला। जो व्यक्ति कल के प्रति आसक्त नहीं है वही पूर्ण धैर्यवान हो सकता है। बीज की उगने से लेकर फल तक की यात्रा बड़े धैर्य के साथ होती है इसलिए कवि ने लिखा है,

धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे सौ घड़ा, रितु आए फल होय।।

सब्र का फल मीठा होता है। आज के युग में हमारी अपेक्षाएँ व महत्त्वाकांक्षायें हमें धैर्य रखने नहीं देती। सारी दुनिया भागमभाग हो रही है जबकि सच्चाई यह है कि हम ताउम्र दौड़ नहीं सकते केवल चल ही सकते हैं। धैर्य धारण करना ही जीवन की सफलता का सरल मार्ग है। ❖

संगठन में कैसे रहें?

● डॉ. अशोक जेठवा, अहमदाबाद (महादेवनगर)

एक से ज्यादा व्यक्ति मिलने पर संगठन बनता है। विविध लक्ष्यों को लेकर विविध प्रकार के संगठन बनाये जाते हैं। जिस प्रकार का लक्ष्य होता है, उसी प्रकार के लोग उस संगठन से जुड़ते जाते हैं और लक्ष्य को पूर्ण करने के प्रयास करते रहते हैं। संगठन को चलाने के निमित्त व्यक्ति संगठन के लिए विधि-विधान, मूल्य, आदर्श तय करते हैं जो संगठन को चलाने में नींव का कार्य करते हैं। संगठन में हर प्रकार के व्यक्ति का मूल्य है। आओ, हम संगठन में श्रेष्ठ रीति से चलने के लिए कुछेक महत्व की बातों का अवलोकन करें:

संगठन में स्व अनुशासन

संगठन में स्व अनुशासन विशेष कार्य करता है। संगठन में रहते हर प्रकार का आदेश, निर्देश, सूचना का पालन करना, स्व अनुशासन का उचित उदाहरण है। जैसे लिफ्ट में जितने व्यक्ति चल सकें, उतनों को ही चलना चाहिए। उसी प्रकार, संगठन में बैठते, चलते, बस में, ट्रेन में, कार्यक्रम के दौरान स्व अनुशासन का प्रयोग अनिवार्य है।

गुण, शक्तियों का प्रयोग

समाने की शक्ति: अन्य की कमी-कमज़ोरी को जानते, समाते हुए उनसे श्रेष्ठ व्यवहार करना, कमी-कमज़ोरी को भरना यह विशेषता इस संस्था के संस्थापक पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा और दादी प्रकाशमणि जी के जीवन में खूब रही। इस प्रकार की विशेषता संगठन को बनाए रखने में विशेष कार्य करती है।

स्वीकार करने की भावना: संगठन में हमें विभिन्न प्रकार के लोग मिलते हैं जो अलग-अलग माहौल से होते हैं। अलग-अलग प्रकार की रीति-रस्म के बीच पले-बड़े हुए होते हैं। इस भिन्नता को समझते एकता में रहना, यही तो जीवन जीने की सच्ची कला है। माला में हर एक मणके का महत्व होता है।

सहनशक्ति: दिनांक 16 नवम्बर विश्व सहनशीलता दिवस के रूप में घोषित किया गया है। इसके पीछे की भावना है कि लोग विश्व की सांस्कृतिक विविधता को समझें, उसका आदर करें, उन्हें स्वीकार करें। जाति, धर्म, भाषा इत्यादि के भेदभाव से ऊपर उठें। समूह में लोगों की असमर्थता, शक्तिहीनता, अक्षमता, अज्ञानता को सहनकर, समझकर चलना ही समूह के आदर्श सदस्य की पहचान है।

सहयोग की भावना: आपस में सहयोग देने का शौक होना चाहिए। हमारा स्वभाव इतना पारदर्शी, सरल, रूहानी स्नेह संपन्न हो कि लोग हमसे सहयोग लेने में, देने में हिचहिचाहट महसूस न करें। सामने से सहयोग की ऑफर करना जैसे आफरीन लेना है। किसी को कब सहयोग देना है, उसकी समझ स्वयं में विकसित करें।

परिचित - अपरिचित संगठन

हमारा परिवार, कार्यालय, व्यवसाय, संस्था जिससे हम जुड़े हैं, जिनको हम रोज मिलते हैं या हर 8-10 दिन बाद मिलते हैं उस परिचित संगठन में कैसे रहना है और अपरिचित संगठन जैसे कि बस में 8-10 घंटे का सफर कर रहे हैं, उन साथी मुसाफिरों के साथ कैसे रहना है, यह कला भी हममें होनी चाहिए। अगर हमारी नींव में परमात्मा द्वारा सिखाया गया भाव पड़ा है कि हम आत्मा-आत्मा, भाई - भाई हैं, विश्व एक परिवार है, हम सभी परमात्मा की संतान हैं तो हमें किसी भी संगठन में चलने में परेशानी नहीं होगी बल्कि हम उस संगठन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन जायेंगे। सभी हमको प्यार करेंगे, हम भी सभी को प्यार दे सकेंगे।

संगठन की शक्ति को बढ़ाने में आपका सहयोग

स्वयं का बोलना, चलना, पहनना, खाना, पीना, व्यवहार में आना संगठन के नियम अनुसार हो, न कि

विपरीत हो जो संगठन के अन्य लोगों को उल्टी दिशा में आकर्षित करे। स्वयं की इच्छा, रुचि, पसंद इत्यादि को संगठन की उन्नति के कारण त्यागना पड़े तो इससे बड़ा सहयोग और कोई नहीं हो सकता। अगर कोई व्यक्ति संस्कारवश संगठन के विरुद्ध कार्य करता है तो उस समय हमें विवेक का प्रयोग कर उसे सहयोग नहीं देना चाहिए। मन को मिलाना, संस्कारों को मिलाना संगठन में सफलता दिलायेगा।

संगठन को मजबूत करने हेतु ईश्वरीय आदेश

एक दूसरे को सम्मान देना, पहले आप कह आगे बढ़ाना, एक ने कहा दूसरे ने माना, इन कथनों का प्रयोग परमात्मा ने सिखाया है। मालिक बन राय देना, बालक बन अन्य की बातों को स्वीकार करने की विधि सिखाई है। परमात्मा की प्रत्यक्षता का आधार भी संगठन ही है।

हमने देखा एक अनोखा संगठन

भारत की एक अग्रणी कंपनी ने अपने इश्तहार में लिखा था कि हमारे यहाँ 40 देशों के 1,33,000 से भी ज्यादा लोग काम करते हैं। पर मुझे बताते हुए अति गर्व होता है कि परमपिता परमात्मा शिव ने ब्रह्माकुमारीज़ का जो संगठन तैयार किया है उसमें 9,00,000 से भी ज्यादा लोग 140 देशों से जुड़े हैं। यह संगठन एक परिवार की रीति से कार्य करता है। काला-गोरा, अमीर-गरीब, बहन-भाई, बच्चा-बुजुर्ग, बिना किसी प्रांत, भाषा, देश की सीमाओं के इस संगठन की अमूल्य ईंटें हैं। ये लोग स्वयं के जीवन को भी श्रेष्ठ बना रहे हैं तो विश्व में सकारात्मक परिवर्तन के कार्य में अपना तन, मन, धन लगा रहे हैं। आपको भी अपने इस परिवार से जुड़ने का हार्दिक निमंत्रण है। ❖

संजय की कलम से..पृष्ठ 3 का शेष..

से प्रेमभाव से मिलने की जो रीति है, इसका शुरू में यही रूप था कि परमपिता परमात्मा शिव से ज्ञान प्राप्त करके मनुष्यों ने ज्ञान-पिचकारी से एक-दूसरे की आत्मा रूपी चोली को रंगा था और एक-दूसरे के प्रति मन-मुटाव तथा मलीन भाव त्याग कर मंगलकारी परमात्मा शिव से मंगल मिलन मनाया था। ज्ञान के बिना मनुष्य भला मंगल-मिलन मना ही कैसे सकता है? अज्ञानी और मायावी मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि राक्षसी स्वभावों से दूसरों का अमंगल करता है।

झूले में श्रीकृष्ण जी की झांकी

ऊपर बताई गई रीति से होली मनाने से ही मनुष्य को श्रीकृष्ण जी की झांकी दिखाई देगी। आजकल होली के उत्सव पर वैष्णव लोग झूले में श्रीकृष्ण (श्री नारायण) की झांकी सजाकर उसके दर्शन मात्र को ही पर्याप्त समझते हैं। उनका यह विश्वास है कि 'इस दिन जो व्यक्ति झूले में झूलते हुए श्रीकृष्ण जी के दर्शन करता है, वह वैकुण्ठ में देव-पद का भागी बनता है। वह वैकुण्ठ में भी श्रीकृष्ण जी का निकट्य प्राप्त करता है अथवा वहाँ भी उसे उनके साथ-साथ झूलने का सौभाग्य प्राप्त होता है।'

वास्तव में 'दर्शन' का अर्थ 'ज्ञान' अथवा पहचान (Philosophy) है। अत: श्रीकृष्ण जी के दर्शन का मतलब है 'श्रीकृष्ण जी की जीवन कहानी का वास्तविक ज्ञान।' जो मनुष्य स्वयं को ज्ञान के रंग में रंगता है और सच्चा वैष्णव (सम्पूर्ण अहिंसक) बनता है, उसे तो वैकुण्ठ में झूलते हुए श्रीकृष्ण के दर्शन होते ही हैं। उसकी आँख तो इस कलियुगी दुनिया से हट जाती है और वैकुण्ठ पर ही लगी रहती है। वह तो इस दुनिया में रहते हुए भी मानो नहीं रहता बल्कि वैकुण्ठ में श्रीकृष्ण को झूलता देखता है। इतना ही नहीं, वह तो स्वयं भी ज्ञान-आनन्द के झूले में झूलता है। जो एक बार उस झूले में झूलता है, उसे विषय-विकार फिर अपनी ओर आकर्षित नहीं करते। उसके लिए होली का उत्सव 'मल-उत्सव' नहीं है, मंथन (ज्ञान-मंथन) उत्सव है। ❖

सकारात्मक सोच

● **सीताराम गुप्ता, पीतमपुरा, दिल्ली**

एक सज्जन हैं जो देर-देर तक कम्प्यूटर पर काम करते रहते थे। बाद में पता चला कि वे कम्प्यूटर पर कुछ काम-वाम नहीं करते थे बल्कि गेम खेलते रहते थे। अपने ज़रूरी काम भी छोड़ देते थे और गेम खेलने में लगे रहते थे। उनकी इस आदत से न केवल उनके घर वाले परेशान थे बल्कि वे स्वयं भी बहुत दुखी थे। उन्होंने बहुत कोशिश की कि गेम न खेलें लेकिन सब व्यर्थ। एक दिन उन्होंने कम्प्यूटर से सारे गेम डिलीट कर दिये और अब वे केवल ज़रूरी काम के लिए ही कम्प्यूटर पर बैठते हैं। यदि कम्प्यूटर में अनुपयोगी कार्यक्रम भरे होंगे तो वे हमारा समय ही नष्ट करेंगे।

अच्छे जीवन के लिए अच्छे विचार

कम्प्यूटर जैसी ही स्थिति हमारे मन की भी होती है। यदि हमारे मन में अनुपयोगी, बेवकूफी भरे, निरर्थक या नकारात्मक विचार भरे होंगे तो वे हमारी सफलता और उन्नति में बाधक ही होंगे। कम्प्यूटर का नियम है कि जो उसमें डालेंगे वही निकलकर बाहर आएगा। मनुष्य मन की भी यही स्थिति है। मन में जैसे विचार उत्पन्न होंगे बाह्य जगत में उनकी वैसी ही प्रतिक्रिया होगी। मनुष्य का स्वास्थ्य, व्यक्तित्व तथा कर्म सभी उसकी सोच द्वारा ही निर्धारित होते हैं। अत: जीवन में अच्छे स्वास्थ्य, प्रभावशाली व्यक्तित्व, सुख-समृद्धि, दीर्घायु, सक्रिय जीवन और संतुष्टि के लिए सदैव सकारात्मक व आशावादी विचारों से ओतप्रोत रहना अनिवार्य है।

अहितकारी को समाप्त करने में हित

कुछ लोग इस पर प्रश्नचिह्न लगाते हैं। उनका कहना है कि कम्प्यूटर में असंख्य कार्यक्रम फीड किये जा सकते हैं। अपनी आवश्यकता और रुचि के अनुसार कार्यक्रमों का चुनाव कर लीजिए। बात ठीक भी है लेकिन जब हमारे सामने अनेक प्रकार के व्यंजन, फल, मेवे रखे होते हैं और चुनाव की बात आती है तो कम स्वादिष्ट लेकिन पौष्टिक व्यंजनों को छोड़कर हम सबसे पहले उन स्वादिष्ट चीज़ों पर हाथ साफ करने की आम मानसिकता में रहते हैं। मधुमेह का रोगी भी सामने आने पर थोड़ी बहुत मिठाई खा ही लेता है जो उसके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। इस प्रकार, चुनाव करते समय मन के फिसल जाने का भय है। चुनाव का मौका ही उत्पन्न ना हो, इसके लिए अहितकारी को समाप्त करने में ही हित है।

एक कम्प्यूटर की एक निश्चित क्षमता होती है। यदि उसे सारे उपयोगी कार्यक्रमों से भर देंगे तो अनुपयोगी के लिए जगह ही नहीं रहेगी। उसी प्रकार मन को भी केवल सकारात्मक उपयोगी विचारों से परिपूर्ण कर लेंगे तो नकारात्मक अनुपयोगी विचारों के लिए स्थान ही नहीं बचेगा और हमारी समस्या का समाधान हो जाएगा।

उपयोगी खिसके नहीं अनुपयोगी ठहरे नहीं

कहना सरल है। करना भी थोड़ा मुश्किल ज़रूर है लेकिन असंभव नहीं। थोड़ा शांत स्थिर होकर विचारों के प्रवाह को देखना है। ये विचार उपयोगी हैं अथवा अनपुयोगी इस पर चिंतन करना है। फिर अनुपयोगी विचारों से छुटकारा पाना है तथा उपयोगी विचारों को दृढ़ करना है। उपयोगी विचार किसी भी हाल में खिसकने न पाएँ तथा अनुपयोगी विचार ठहरने न पाएँ। किसी भी अनुपयोगी या नकारात्मक विचार से बचने का दूसरा तरीका यह है कि उसे सकारात्मक विचार में परिवर्तित कर लें। यदि किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थिति के प्रति घृणा या विद्वेष का भाव है तो उसके स्थान पर प्रेम, करुणा और मैत्री जैसे भाव जगाएँ। सकारात्मक विचार के सम्मुख नकारात्मक विचार स्वत: समाप्त हो जाएँगे। चाहे तो मुँह से बोलकर कहें या मन में कहें कि मैं अमुक व्यक्ति से प्रेम करता हूँ, उसका आदर करता हूँ, उसको स्वीकार करता हूँ। फिर धीरे-धीरे इस कल्पनाचित्र या भाव का निर्माण करें। जैसे-जैसे भाव का

निर्माण होगा वैसे-वैसे संबंधों में सुधार होकर मैत्री और सहयोग का विकास और विस्तार होगा।

स्वास्थ्य और समृद्धि के प्रति उत्तम भाव अच्छे स्वास्थ्य और समृद्धि की सृष्टि में सहायक होंगे। मन रूपी कम्प्यूटर में निम्नलिखित भाव फीड कर दीजिए और जीवन में मनचाही स्थितियों का निर्माण कीजिए:

1. मैं पूर्ण रूप से स्वस्थ हूँ तथा अत्यंत सक्रिय जीवन व्यतीत कर रहा हूँ।
2. मेरा व्यक्तित्व अत्यंत प्रभावशाली है तथा मैं सभी का सम्मान करता हूँ तथा सबसे प्रेम करता हूँ।
3. मैं पूर्ण रूप से सफल और समृद्ध जीवन व्यतीत कर रहा हूँ, जीवन में प्रचुरता का आनंद ले रहा हूँ।

याद रहे, ये भाव उपयोगी हों, सकारात्मक हों, तभी आप लाभांवित हो सकेंगे, पूरा समाज लाभान्वित हो सकेगा। ❖

सत्य कर्म ही सच्चा साथी

यदि हम जीवन भर पुण्यकर्म और श्रेष्ठ कर्म ही करते रहें तो हमारा भविष्य भी उसी अनुरूप होता है। एक सच्चे मित्र की भाँति ये सत्य कर्म हर समय और हर परिस्थिति में हमारी मदद (रक्षा) करते हैं और विघ्न उपस्थित होने से पहले ही उसको मिटा देते हैं। भौतिक मित्र तो साथ छोड़ भी देते हैं परंतु सत्य कर्म एक ऐसा मित्र है जो हर घड़ी परछाई की तरह हमारे साथ ही रहता है। जब जीवन में नकारात्मक घटनायें घटती हैं तब संसार की कोई भी वस्तु काम नहीं आती लेकिन एक मित्र अटल-अडोल होकर काम आता है वह है सच्चा कर्म। जो कर्म आत्मा के स्वरूप में टिककर, परमात्मा की स्मृति में रहकर, नि:स्वार्थ भावना से और विकारों से मुक्त होकर किये जाते हैं, वे ही सत्यकर्म कहलाते हैं।

दुखी होने के बजाय कर्मों को सुधारें

कर्म के फल से हम बच नहीं सकते चाहे हमारा दूसरा जन्म ही क्यों न हो जाये। उसे भोगकर ही चुक्तू करना पड़ेगा। इस अविनाशी विश्व-नाटक का यह अटल नियम है। अच्छे और बुरे कर्मों का हिसाब-किताब है। हम अनुभव करते हैं कि कभी बीमारी, कभी नुकसान, कभी अकाल मृत्यु, कभी मानसिक यातना, कभी दैवी प्रकोप का हमें नुकसान उठाना पड़ जाता है और दूसरा व्यक्ति बाल-बाल बच जाता है। ऐसा क्यों? निश्चित रूप से यह पूर्व के पाप व पुण्य के फल का हिसाब-किताब है। अत: दुखी होने के बजाय उस सत् बाप को याद कर अपने कर्मों को सुधारना उचित होगा। इस सत्य को समझकर हम अपनी तकदीर को अपना सच्चा-सच्चा मित्र बना सकते हैं। तदबीर से ही तकदीर बनती है। दूसरों को दोष देना व्यर्थ है। कर्म तो हमें करना ही है। यह पाँच तत्वों से बना शरीर मिला है तो कोई भी प्राणी इस संसार में कर्म के बिना रह नहीं सकता। तो क्यों न हम श्रेष्ठ कर्म ही करें। इससे मानसिक यातनायें झेलने से बच जायेंगे। इसलिए किसी से बदला न लो, स्वयं बदलकर दिखाओ।

ईश्वरीय मत से बनते हैं कर्म सुकर्म

यह सतकर्म ही हमें धर्मराज की सज़ा से बचा पायेंगे। जब धर्मराज बाबा के दरबार में जाना ही है तो क्यों न हम अच्छे कर्म करके जायें, बुरे कर्म करके मुँह काला करके धर्मराज की सज़ा के पात्र क्यों बनें? इस संसार से जाना है तो श्रेष्ठ पात्र बनकर जाना चाहिए, दोषी बनकर नहीं। कौन-सा कर्म अच्छा है और कौन-सा बुरा, यह परमात्मा के अलावा और कोई बता नहीं सकता। वे ऊँचे से ऊँचे हैं तो उनकी मत भी ऊँचे से ऊँची है। तो जरूर उनकी श्रीमत पर चलना पड़े। परमात्मा पिता को पहचानकर अर्थात् जिस साकार तन में शिव परमात्मा प्रवेश करके सतयुग की स्थापना का कार्य कर रहे हैं, उनकी मत पर चलने से ही कर्म, सुकर्म बन जायेंगे। परमत या मनमत पर जो कर्म किये जाते हैं, वे सब विकर्म बन जाते हैं। वे दुर्गति में ही ले जाते हैं। सच्ची-सच्ची सद्गति करने वाले सद्गतिदाता एक शिवबाबा ही हैं जो कर्म की गुह्य गति को समझाते हैं।

● **ब्रह्माकुमार सुभाष, चंद्रपुर**

भ्रूण हत्या: अध्यात्म में है समाधान

● ब्रह्माकुमारी कोमल, बराड़ा (अम्बाला कैन्ट)

'नारी उत्थान' विषयक कार्यक्रम में सभी मातायें, बहनें बहुत हर्षित एवं उत्साहित थीं पर एक माता की आँखों से निरंतर अश्रुधारा प्रवाहित हो रही थी मानो उसके अंदर का दर्द बाँध तोड़कर उमड़ रहा हो। माता को अपने पास बिठाकर प्यार से पूछा तो आँसुओं के बाँध को हाथों के सहारे रोकने की कोशिश करते कहने लगी, अभी-अभी कार्यक्रम में सुना कि माँ, बच्चे का पहला गुरु होती है, उसे जीवन की राह पर समस्याओं का सामना करते चलना सिखाती है, बच्चे पर तकलीफ आने पर माँ कवच बनकर उसे सुरक्षित रखती है परंतु मैं अभागन माँ तो अपना कर्त्तव्य ही भूल गई थी। आज आपकी बातें सुनकर मुझे अपने किये पर बहुत पश्चाताप हो रहा है। बोलते-बोलते उसके अश्रुओं का बाँध फिर टूट गया। पारिवारिक दबाव में उसने अपनी गर्भस्थ कन्या की हत्या करा दी थी।

आत्मा न स्त्री है, न पुरुष

संतान की हत्या के पश्चाताप को ढोने वाले हमारे देश में लाखों माता-पिता हैं। इनमें भी माता का हृदय अधिक बोझ महसूस करता है, जीवन भर तड़पता है, पश्चाताप करता है। इस संबंध में आध्यात्मिक ज्ञान हमारी बहुत मदद कर सकता है। अध्यात्म

कहता है, आत्मा अजर, अमर, अविनाशी है, वह न स्त्री है, न पुरुष। आत्मा सिर्फ स्त्री या पुरुष रूपी वस्त्र धारण कर इस सृष्टि नाटक में अपने पार्ट अनुसार जन्म लेती है। जैसा पार्ट, वैसी ड्रेस। जैसे राम का पार्ट है तो राम की ड्रेस, सीता का पार्ट बजाना है तो सीता की ड्रेस। अब सीता, राम की ड्रेस पहनकर तो सीता का अभिनय नहीं कर सकती। **अतः यदि आत्मा को लड़की का चरित्र निभाने को मिला है तो वह स्त्री शरीर रूपी वस्त्र ही धारण करेगी। सृष्टि-नाटक के अनुसार यदि उस आत्मा को किसी की बहन या पत्नी बनने का पार्ट निभाना है तो वह स्त्री चोला पहनकर ही निभायेगी, न कि पुरुष का चोला पहनकर।**

बुरा परिणाम
प्रकृति से छेड़छाड़ का

स्त्री, पुरुष, काला, गोरा – ये सब चोले प्रकृति व सृष्टि नाटक के नियम अनुसार हैं। यदि हम इस नियम के साथ छेड़छाड़ करते हैं तो परिणाम बहुत बुरा होता है। आज हम देखते हैं कि बच्चा पैदा होता है, किसी के दिल में छेद, किसी का गुर्दा अस्वस्थ, किसी की दोनों भुजायें जुड़ी हुई – सब प्रकृति के नियम के साथ छेड़छाड़ का ही परिणाम तो हैं। प्रकृति भी अपने द्वारा प्रदान किये गये सुंदर अनमोल तोहफे (शरीर) को नकार देने, उसके साथ दुर्व्यवहार करने, उसे अपनी मर्ज़ी से खत्म कर देने का बदला अवश्य लेती है। इसलिए माताओ जागो, अपनी महिमा को जानकर, अपने कर्त्तव्य को पहचानकर कर्म करो। समय-चक्र जिस स्थान पर आरंभ होता है, वहीं जाकर रुकता है। आज हम अपनी कन्या की हत्या करेंगे, कल को हमारे साथ भी वैसा ही होगा।

जैसा करेंगे, वैसा पायेंगे

अध्यात्म हमें कर्म और फल की सही जानकारी प्रदान कर जागरूक बनाता है। कर्म रूपी फल वह फल है जो सभी को खाना ही पड़ता है चाहे हँसकर या रोकर। केला, आम, संतरा आदि फल किसी को पसंद नहीं तो वह खाने से इंकार कर सकता है परंतु कर्मफल के लिए नहीं। यदि कन्या के रूप में जन्म लेने वाली आत्मा का अपनी माँ या उस घर की

अन्य आत्माओं के साथ हिसाब-किताब है तो वह अवश्य ही वहीं जन्म लेगी। यदि बार-बार उसे इस तरह मार दिया गया तो अवश्य ही माता-पिता और परिवार का कर्मबंधन और भी कड़ा हो जायेगा। मान लीजिए, वह आत्मा लड़के का शरीर लेकर उस घर में पुन: जन्म ले भी ले तो क्या वह अपने पिछले शरीर के खत्म होने का बदला नहीं लेगी? आज अखबारों में भी समाचार पढ़कर दिल दहल जाता है कि बेटे ने माँ-बाप की चाकू मारकर हत्या कर दी। यह सब क्या है, अपनी मौत का बदला ही तो है। जैसा करेंगे, वैसा पायेंगे। इसलिए **समय को पहचानो, यह अंतिम समय पुराने हिसाब-किताब चुक्ता करने का है और यदि हम नये हिसाब-किताब – पुरानी रूढ़ियों, मान्यताओं को आड़े रखकर बनाते रहेंगे तो उस लड़के को पाकर भी चैन, सुकून की ज़िन्दगी नहीं जी सकेंगे। फिर तो किसी कन्या की लाश पर जन्म लेने वाला यह लड़का, आपकी अतिशय चाहत का बेजा फायदा उठाकर बुरी आदतों, व्यसनों और गलत संग में पड़कर आपका जीना भी हराम कर देगा।**

नारी कम नहीं नर से

अभी थोड़े समय पहले ही एक माता अपना दुख सुनाते हुए कह रही थी कि उसकी बहू को 12 और 15 साल की दो बेटियाँ हैं। बेटा पाने की इच्छा से दो जुड़वाँ बच्चियों को गर्भ में ही खत्म करवा दिया। फिर बहुत मन्नतों के बाद घर में लड़का हुआ तो बुढ़ापे की उम्र तक आते-आते उसे पाल-पोसकर बड़ा किया। बड़ा होने के बाद अब वह बूढ़े माँ-बाप का सहारा बनने के बजाय शराब पीकर सड़क पर लेटा रहता है। बूढ़ी माँ को अभी भी उसका ही सहारा बनना पड़ता है। अब तो उसका दिल यह कहकर रोता है कि ऐसे पुत्र से तो बिना पुत्र ही अच्छे थे। मार-पीट, गाली-गलौच कर माँ से सारे पैसे ले जाता है। नर्क बना दी है उसकी ज़िन्दगी। जिस लड़के को भविष्य जीवन का आधार समझकर पाला-पोसा, उसने जीवन को लाचार बना दिया और जिन दो लड़कियों को बोझ समझकर पाला, वे बुढ़ापे का सहारा बनी हैं।

देवकुल का नशा

आज घर से लेकर कार्यालय तक, बच्चों की सेवा, समाजसेवा से लेकर विश्व की सेवा तक, राज्यसत्ता, धार्मिक सत्ता, आध्यात्मिक सत्ता सभी में बहनें आगे हैं। परमात्मा पिता ने सर्वप्रथम सन् 1936-37 में माताओं, बहनों को आगे रखकर उन्हें विश्व नवनिर्माण का विशाल एवं महान कार्य सौंपा। त्रिकालदर्शी परमात्मा पिता भी जानते हैं माताओं, कन्याओं की जन्मजात विशेषतायें जैसे कि सहनशीलता, नम्रता, त्याग, सेवाभाव आदि-आदि। तब मानव क्यों नहीं परमात्मा पिता से सीखे और नारी को उसका उचित स्थान प्रदान करे। अब परमात्मा पिता की श्रीमत है कि इस विनाशी वंश की वृद्धि की चिंता छोड़ ईश्वरीय वंशी बनो तब ही भविष्य में सूर्यवंशी, चंद्रवंशी देवकुल में जन्म लेंगे जहाँ अपार सुख, शांति एवं पवित्रता का राज्य होगा। योगबल से वहाँ दोनों संतान (लड़का, लड़की) का सुख मिलेगा। ❖

ओ मधुर बाबा!

ब्रह्माकुमार श्रीधर, कोदरिया (इन्दौर)

पा तुम्हारा स्नेह बाबा, धन्य जीवन हो गया,
सच इसे मानो अमावस में उजियारा हो गया।
लोग कहते हैं बहुत खुश हो, तुम्हें क्या हो गया,
क्या बतायें हम उन्हें क्या मिल गया, क्या खो गया।।

भटकती नाव को बाबा ने किनारा दे दिया,
उजड़ती आस को उसने सहारा दे दिया।
ओ मधुर बाबा तुम्हारे दान के हित शुक्रिया,
ज़िन्दगी की सांझ को तुमने सितारा दे दिया।।

प्यारे बाबा का मिलन किस त्योहार से कम है ?
मिल गए बाबा फिर हमें किस बात का गम है ?
मिल रहे वरदान बाबा से हमें भर झोलियाँ,
सबसे ज्यादा भाग्यशाली विश्व में हम हैं।।

दया के सागर ने दी आवाज

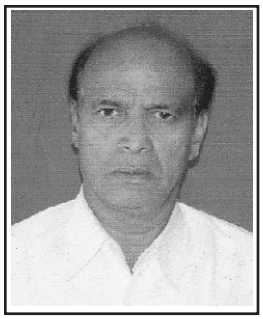

● ब्रह्माकुमार देवराम, मुक्ताईनगर (महाराष्ट्र)

मैं बचपन से ही सत्संग, कथा या ईश्वर-चर्चा में रुचि रखता था। लौकिक पढ़ाई बहुत कम थी। पढ़ने का शौक बहुत था। लौकिक पढ़ाई पढ़ते-पढ़ते मुझे भगवान के बारे में सच्चाई जानने की चाह होने लगी।

दिन बीतते गये। एक दिन जब मैं घर से काम पर जा रहा था तो रास्ते में एक मकान पर बोर्ड लगा हुआ देखा जिस पर लिखा था, 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय।' उसके बाद हर रोज़ आते-जाते मेरा ध्यान उस बोर्ड पर ज़रूर जाता था। बोर्ड पर नीचे 'नि:शुल्क सेवा' लिखा था। मेरे मन में थोड़ा लालच जागा कि नि:शुल्क है तो जाकर देखना चाहिए। कई दिन ऐसे ही चले गये।

आखिर वह दिन भी आ गया जब प्यारे बाबा से मेरा परिचय हो गया। मेरी युगल मायके गई थी। जब वह वापस आई तो बाबा को साथ लेकर आई। घर में आते ही मुझे कहा, आपने अपने शहर में कहीं ब्रह्माकुमारीज़ का सेन्टर देखा है क्या, वहाँ भगवान की सच्चाई बताई जाती है? स्वयं भगवान आकर सत्य ज्ञान दे रहे हैं, मैं वहाँ जरूर जाऊँगी। मैंने कहा, भगवान के लिए जाना है तो मैं क्यों मना करूँगा, जाया करो। मेरी युगल सेन्टर पर जाने लगी। उन्होंने सेन्टर की बहनों को सात दिन के कोर्स के लिए घर में बुलाया। हम बाबा के बच्चे बन गये। हमारा जीवन धन्य-धन्य हो गया। उस दिन से आज तक मैं बेफिक्र बादशाह बनकर जीवन जी रहा हूँ और बाबा की हर श्रीमत सिर्फ मेरे लिए समझकर चलता हूँ। इसका एक प्रैक्टिकल उदाहरण है –

नवंबर, 2011 में अचानक मेरा बी.पी. बढ़ने के कारण मैं शाम 7 बजे दवाखाने में गया। वापसी में सोचा, सेन्टर पर जाऊँगा लेकिन सीढ़ी नहीं चढ़ी गई। मैं घर आ गया। घर में पलंग के सामने ही बाबा की बड़ी तस्वीर लगी हुई है। मैंने पलंग पर बैठकर दवा ली। रात को खाना खाने के बाद जब मैं बाबा को गुडनाइट करके सोने लगा तब घड़ी में 11.45 हो रहे थे। मैं सो गया। अचानक 12 बजे दो बार आवाज़ आई 'उठो भाई', उठा तो क्या देखा कि मेरा सीधा पैर और सीधा हाथ पूरे ही सुन्न पड़ गये हैं जैसे सौ प्रतिशत जड़ हो गये हैं। मैं बिस्तर से उठकर दीवार के सहारे बाहर आया यह जानने के लिए कि किसने आवाज़ दी। इधर-उधर सब तरफ देखा पर कोई नहीं दिखाई दिया। फिर दीवार के सहारे पैर घसीटते हुए घर के अंदर आया, युगल को उठाया। मैं समझ गया कि यह पैरालिसिस का झटका है। मैंने दिल से बाबा का शुक्रिया अदा किया कि बाबा, आपने मुझे तुरंत ही आवाज़ दी, 'उठो भाई' नहीं तो नींद में पैरालिसिस ज्यादा बढ़ जाता। फिर मैंने एक दैवी भाई को फोन किया। वे गाड़ी लेकर आ गये और मुझे अस्पताल ले गये।

कैसे और किन शब्दों में बाबा का धन्यवाद करूँ जो मैं डॉक्टर के पास गया तो डॉक्टर ने भी कहा, आजकल मैं रात को 11 बजे मोबाइल का स्वीच ऑफ कर देता हूँ, मरीज़ लेता नहीं हूँ लेकिन आज मोबाइल बंद करना भूल गया था इसलिए तुम्हें लेना ही पड़ा। दया के सागर बाबा की नज़र जो थी मुझ पर। बाबा की मदद और डॉक्टर की मेहनत से तीन दिन में मैं सौ प्रतिशत ठीक हो गया। बच्चों पर आये हुए विघ्न को भगवान सूली से कांटा बनाता है, यह केवल सुना था लेकिन अभी प्रैक्टिकल अनुभव किया।

जो भी मुझे देखने आते, सब यही कहते कि आपको बाबा ने ही नया जीवन दिया है। अवश्य ही मेरे से बाबा को कोई सेवा करानी है। मैं अपने प्यारे बाबा, रहमदिल, रूहानी सर्जन, खुदा दोस्त का पद्मापद्म बार दिल से शुक्रिया करता हूँ। ❖

समय, संसार व सर्वशक्तिवान की एक ही पुकार : ज्वालारूप योग से करो चमत्कार

● ब्रह्माकुमार हेमंत, शान्तिवन

सृष्टि-चक्र अंतिम पड़ाव पर आ चुका है, संसार दु:खों से त्रस्त हो चुका है, समय सर्वनाश की चेतावनी दे रहा है, धरती पापों के असहनीय बोझ से कांप उठी है, आसमां आतंक से थर्रा रहा है और हर रूह प्यासी नज़र व करुण हृदय से प्राणाधार प्रभु को बार-बार पुकार रही है। पाँचों तत्व सर्वशक्तिवान के पास पहुँच अन्तिम परिवर्तन की आज्ञा मांग रहे हैं। परमदयालु, कृपालु भगवान शिव द्रवित हो ब्रह्मावत्सों को बारंबार प्रेमभरे इशारे दे रहे हैं कि हे विश्वपरिवर्तक श्रेष्ठ आत्माओ, अब जागो, उठो और स्वपरिवर्तन से सृष्टि व संसार परिवर्तन का श्रीगणेश करो। अपने ही दु:खी-अशांत आत्मिक भाई-बहनों की पुकार सुनो, उन्हें सकाश का प्रकाश दो.. हे इष्टदेव, पूज्य व पूर्वज, अपने भाई-बहनों को सुख-शांति की अंचली दो..हे प्रकृतिपति, सर्व शक्तियों की किरणों से प्रकृति को भरपूर करो। योगाग्नि की ऐसी महाज्वाला प्रज्वलित कर दो जो मेरे-तेरे के झमेले समाप्त हो जाएँ, व्यर्थ विचारों के जाले कट जाएँ, माया का महीन से महीन धागा टूट जाए, रावण का रॉयल रूप भस्म हो जाए। हे महातपस्वियो, ज्वालामुखी योगतपस्या की ज्वाला से खुद को शक्तिशाली बनाओ.....।

समय, संसार और सर्वशक्तिवान की पुकार सुनें

यह तभी होगा जब अध्यात्म पथ के योगी तीव्र पुरुषार्थ से तीव्र-स्वपरिवर्तन को अंजाम देंगे। बेहद के वैराग्य रूपी लकड़ियाँ इकट्ठी होंगी और लगन की अग्नि तेज़ होगी। योग रूपी यज्ञकुंड में इच्छा-तृष्णा-कामना की आहुतियाँ पड़ने लगेंगी। व्यर्थचिंतन, परचिंतन के जाल जलेंगे। स्व का सुंदर परिवर्तन होगा तब ही सुखमय संसार का आगमन होगा। तो हे महातपस्वियो, आओ चलें समय, संसार व सर्वशक्तिवान की सुनें पुकार, सब मिल कर करें नया चमत्कार, हो एक की लगन में मगन, जलाएँ ज्वालामुखी योग की अगन लेकिन उसके लिए अनिवार्य है ज्वालामुखी योगाग्नि की गहरी समझ।

क्या है ज्वालामुखी?

जब धरती का आवरण पतला हो जाता है, तब भूगर्भ में छिपा लावा धधकते हुए बाहर निकलने लगता है। उसकी शक्ति बाहर सब कुछ बदल देती है। ज्वालामुखी भी तीन प्रकार के होते हैं –

(1) सुप्त यानि सोये हुए ज्वालामुखी: ये भूमि के अंदर ही अंदर धधकते रहते हैं।

(2) जागृत ज्वालामुखी: ये धरती का बाहरी कवच नष्ट कर देते हैं लेकिन अन्दर ही धधकते रहते हैं, इनकी ज्वाला बाहर प्रकट नहीं होती, फिर भी उन्हें बाहर से देखा जा सकता है।

(3)परिवर्तनशील ज्वालामुखी: धरती की परत तोड़ बाहर आते ही रौद्र रूप प्रकट करते हैं। उनसे लावा उफन-उफन कर बाहर फैलता रहता है, जो चारों ओर फैलकर जीव-सृष्टि को बदल देता है।

तीन प्रकार के योगी

संसार में भी तीन प्रकार के योगी हैं। पहले, जो अन्दर ही अन्दर पुरुषार्थ का प्लैन बनाते रहते हैं। योग के लिए चितंन-मनन भी करते हैं लेकिन निरन्तर अभ्यासरत होते भी देहभान की परतें तोड़ नहीं पाते। दूसरे, देहभान का कवच तोड़ने में सफल तो हो जाते हैं, वे सदा योगयुक्त भी रहते हैं लेकिन उनकी योगशक्ति अपने तक सीमित होती है। उनकी श्रेष्ठ स्थिति की सुंगध तो आती है लेकिन वे शक्तिशाली स्थिति से स्व व सर्व का सदाकाल का परिवर्तन नहीं कर पाते। इन दोनों की भेंट में तीसरे वे महाशक्तिशाली योगी

तू आत्माएं हैं, जो स्वयं की शक्तिशाली स्थिति से स्वपरिवर्तन कर लेते हैं तथा दूसरों के परिवर्तन का आधार बन जाते हैं। वे समय की धारा मोड़ने में समर्थ होते हैं क्योंकि वे सदा महसूसता की शक्ति से स्वयं को जागृत रखते हैं।

सच्चिदानंद शिव का निरंतर चिंतन

निरन्तर शक्तिशाली याद के लिए चाहिए अंतर्मुखता। जब साधक कर्म करते हुए भी अंतरात्मा की गहराई में उतरेगा, देहभान व इंद्रिय रसों से ऊपर उठेगा, अनासक्त हो, आकर्षणों से पार हो, साक्षी बन हर दृश्य को देखते भी न देखेगा, चित्त में सच्चिदांनद शिव का ही निरन्तर चिंतन करेगा एवम् परमधाम निवासी महाशिवज्योति पर चिड़िया की आंख में आंख गड़ाने वाले अर्जुन के समान निरन्तर ध्यान जमाये रहेगा, तब एकाग्रता व समर्पणता के मिलन से शिव के गुण और शक्तियां निरन्तर उस पर प्रवाहित होंगे।

सिद्धिस्वरूप अवस्था

मीरा, एक गिरधर गोपाल के ही प्यार में मगन हो दुनिया के लोकलाज के आवरण को तोड़ पाई, ऐसे ही प्रभु प्रेम की प्यास ही देह व देहजगत के भान के आवरण को तोड़ सकेगी। जब परमात्म-प्रेम की शक्ति नस-नस, रोम-रोम से प्रस्फुटित होगी, तब ही देहभान का आवरण छिन्न-भिन्न हो जायेगा। संकल्प शुद्ध, शुभ व सकारात्मक हो जायेंगे तथा वाणी व कर्म में दिव्यता दिखाई देगी। तब योगी का सानिध्य दूसरे को सच्चे स्नेह व शांति की अनुभूति कराने में सक्षम होगा यानि योगी का सकारात्मक शक्तिशाली परिवर्तन दूसरों को प्रेरणा देगा। यह अवस्था परमसिद्धि प्रदायक है। ईश्वरीय महावाक्यों के अनुसार, यह दु:खी को सुखी, निर्बल को बलवान, रोगी को निरोगी, अशांत को शांत, गुणहीन को गुणवान बनाने वाली सिद्ध अवस्था यानि सफलता दिलाने वाली कला है। जैसे विज्ञान के उपकरण गरम हवा को ठंडी हवा में और ठंडी को गरम हवा में बदल देते हैं, रेगिस्तान में नंदनवन बसा देते हैं, ऐसे ही सिद्धिस्वरूप अवस्था आत्माओं की मानसिक स्थिति को पलभर में परिवर्तन कराने में सक्षम है।

ज्वालामुखी योगावस्था

अव्यक्त बापदादा से महामिलन के समय साधारण स्थिति वाली आत्माएं भी परमात्म प्रेम, आनंद, खुशी के अनुभव में डूब जाती हैं अर्थात् ईश्वरीय संग का रूहानी रंग आत्माओं की स्थिति का परिवर्तन करा देता है। साकार में ब्रह्मा बाबा अपनी सम्पन्न-संपूर्ण स्थिति के समीप थे तब उनकी शक्तिशाली स्थिति के सामने समस्या लेकर पहुँचने वाली आत्माएं क्षण में समस्या भूल समाधान यानि तनावमुक्त स्थिति का अनुभव करती थीं। बाबा की शक्तिशााली स्वस्थिति दूसरों के मनोवेग को मोड़ मुक्ति का सुख देती थी। ऐसे ही माँ जगदम्बा सरस्वती की शक्तिशाली स्थिति पापात्माओं की दृष्टि-वृत्ति बदल देती थी। वरिष्ठ दादियों का सानिध्य भी आत्माओं को आनंद व आह्लाद से भर देता है, यह उनके चलते-फिरते परिवर्तनकारी स्नेह व शक्तिस्वरूप योग का ही तो प्रमाण है। यही ज्वालामुखी योगावस्था है।

व्यक्ति, वस्तु, वैभव व पदार्थों की आसक्ति रूपी गीलेपन से मुक्त, बेहद वैराग्य रूपी लकड़ियां (यज्ञ में पड़ने वाली समिधा) और श्रेष्ठ व तीव्र परिवर्तन के संकल्प रूपी चिंगारी जब योगाग्नि के महाकुण्ड में पड़ेगी, तब शक्तियों की ज्वाला धधक उठेगी। स्व के शक्तिशाली परिवर्तन से, आत्मा के सानिध्य में आने वाली हर रूह आत्मीयता व अमन-चैन का आनंदपान करेगी। समय, संसार व सर्वशक्तिवान की शुभआशाओं की पूर्ति के साथ स्वर्णिम संसार का आगमन होगा। तो हे योगी तू आत्माओ, अब देर न करो, उठो, जागो और जगाओ, ज्वालामुखी योगाग्नि को प्रज्वलित कर स्वपरिवर्तन से समय व संसार के परिवर्तन का चमत्कार कर दिखलाओ। ❖

बच्चों को बचाने वाला बाबा

● ब्रह्माकुमार कमलेश, मांगरोल (सूरत-वराछा)

कहते हैं, जाको राखे साईंया, मार सके न कोई। भावार्थ यही है कि जिसके सिर पर सर्वशक्तिवान का हाथ हो, उसका किसी भी परिस्थिति में कुछ भी बिगड़ नहीं सकता।

मुझे सन् 2004 में ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त हुआ। इससे पहले भी मैं मानता था कि जो होता है, अच्छा ही होता है। बाबा का बनने के बाद यह एकदम पक्का हो गया।

बात 30 सितंबर, 2011 की है, हम बाबा की दी हुई मारुति वेन लेकर मांगरोल से 20 कि.मी. दूर लगाई गई ईश्वरीय ज्ञान की प्रदर्शनी के उद्घाटन के लिए जा रहे थे। ब्रह्माकुमारी शारदा बहन और तीन कुमारियाँ साथ थीं। लगभग 20 मिनट की यात्रा के बाद सड़क पर एक बड़ा सर्प आ गया, उसे बचाने के लिए गाड़ी को धीरे से ब्रेक लगाया। लेकिन पीछे सरकारी बस फास्ट गति से आ रही थी। शायद उस ड्राइवर का ध्यान कहीं और होगा या कुछ भी कारण हुआ, बस ने पीछे से ज़ोरदार टक्कर लगा दी। सिर्फ एक सेकंड का खेल था, गाड़ी जो पूर्व दिशा में जा रही थी, टक्कर के बाद उत्तर दिशा में मुड़ गई और पलट गई। चारों पहिये आकाश की ओर हो गये। हम पाँचों भाई-बहनें अंदर ही थे लेकिन बाबा अपने बच्चों का रक्षक सदा ही है। हम सबको यही अनुभव हुआ कि बाबा ने हमें अपनी गोद में ले लिया हो। इतनी भयंकर टक्कर के बाद भी सबको ना के बराबर चोट लगी। धीरे-धीरे सब उलटी गाड़ी से बाहर आ गये, कोई चीखने या चिल्लाने की आवाज़ नहीं थी।

एम्बुलेन्स को बुलाकर सभी को प्राथमिक उपचार के लिए भेज दिया गया। पाँच मिनट के अंदर वहाँ बहुत भीड़ इकट्ठी हो गई। जो भी देखता, यही कहता कि इस गाड़ी में एक भी बचा नहीं होगा। मैं वहीं खड़ा सुन रहा था, बिना किसी तनाव या घबराहट के। सभी को बताया कि किसी को कुछ भी नहीं हुआ है। लोग तो मानने को भी तैयार नहीं हो रहे थे। हमने बाबा की बातें उन्हें सुनाई कि देखो भगवान कैसे अपने बच्चों की रक्षा करता है।

वहाँ से आने के बाद रात को सोने गया तो बाबा को धन्यवाद करते हुए गुड नाइट की। फिर आँखें बंद की तो अनुभव हुआ कि जैसे लाइट की शक्तिशाली किरणें मेरी तरफ आ रही हैं। फिर देखा कि बाबा बाँहें पसारे कह रहे थे, बच्चे, मैं हूँ ना और फिर मुझे सुला दिया।

बाबा ने सुबह की मुरली में तीन बातें उस घटना पर सुनाईं। सर्प निमित्त बना तो बाबा ने सुनाया कि सतयुग में सर्प होंगे ही नहीं जो किसी को दुख दें। फिर सुनाया कि यह तो बना हुआ ड्रामा है, क्यों हुआ, कैसे हुआ, यह प्रश्न ही नहीं उठ सकता। वरदान में सुनाया कि नाजुकपने के संस्कार समाप्त कर शक्तिशाली संस्कार को धारण करने वाले डबल लाइट फरिश्ता भव। इस प्रकार बाबा ने ज्ञान से और मज़बूत बना दिया। दिल अब यही कहता है, नवजीवन देने वाले बाबा, आपका बारंबार शुक्रिया! ❖

मनुष्य को मनोरंजन करने की आवश्यकता महसूस हो तो वह भी ऐसा होना चाहिए जिससे कि कोई बुरा संस्कार ना बने और बुरी आदत ना पड़े। ईश्वरीय ज्ञान, राजयोग तथा सद्गुणों से युक्त क्रियाकलापों द्वारा ही सच्चा मनोरंजन होता है।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 gyanamritpatrika@bkivv.org

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

1.बुरला (सम्बलपुर)- उड़ीसा के मुख्यमंत्री भ्राता नवीन पटनायक का स्वागत करते हुए ब्र.कु. पार्वती बहन। **2.बैजनाथ-** हि.प्र. के मुख्यमंत्री भ्राता वीरभद्र सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सुलक्षणा बहन। **3.अजमेर-** जिला एवं सत्र न्यायाधीश भ्राता ए.के.शारदा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. इन्द्रा बहन। **4.जम्मू-** जम्मू-कश्मीर के आवासीय एवं संस्कृति मंत्री भ्राता रमन भल्ला ग्राम विकास मेले का उद्घाटन करते हुए। साथ में ब्र.कु. सुदर्शन बहन तथा अन्य। **5.ढेंकानाल-** युवा महोत्सव का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. ऊषा बहन, उड़ीसा के खान तथा इस्पात मंत्री भ्राता रजनीकान्त तथा अन्य। **6.सुन्दरगढ़-** उड़ीसा के खान तथा इस्पात मंत्री भ्राता रजनीकान्त को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. ज्योत्सना बहन। **7.रतलाम-** म.प्र. के शहरी विकास राज्यमंत्री भ्राता मनोहर ऊटवाल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सीमा बहन। **8.बरेली-** उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री भ्राता विजय बहुगुणा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सरोज बहन। **9.अम्बाला कैन्ट-** हरियाणा विधानसभा के उपाध्यक्ष भ्राता अकरम खान, ब्र.कु. शैली बहन को सम्मानित करते हुए। **10.जम्मू (शास्त्री नगर)-** विश्व शान्ति मेले का अवलोकन करते हुए खेल मंत्री भ्राता आर.एस.चिब। साथ में ब्र.कु. निर्मल बहन तथा अन्य। **11.ग्वालियर-** 'फ्यूचर ऑफ पावर' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश भ्राता आर.सी.लाहोटी, ब्र.कु. निजार जुमा भाई, ब्र.कु. अवधेश बहन तथा अन्य।

Regd. No. RAJHIN10563/65, Postal Regd. No. RJ/SRO/9559/2012-2014
Posted at Shantivan-307510 (Abu Road) on 1-6 of the month.

अमरावती

भारत की पूर्व राष्ट्रपति बहन प्रतिभा पाटिल, डॉ.अशोक मेहता, डॉ.बनारसी लाल, ब्र.कु. सीता बहन तथा अन्य नव सभागार का उद्घाटन करते हुए।

कुरुक्षेत्र

हरियाणा के राज्यपाल महामहिम भ्राता जगन्नाथ पहाड़िया को ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. सरोज बहन।

भुवनेश्वर

उड़ीसा के राज्यपाल महामहिम भ्राता मुरलीधर चंद्रकांत भण्डारे को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.उमा बहन। मंच पर उपस्थित हैं सांसद भ्राता प्रसन्न पाटसानी, विधायक भ्राता राजेन्द्र साहू, एवं ब्र.कु. लीना बहन।

गंगटोक (सिक्किम)

सेवाकेन्द्र के नये भवन का शिलान्यास करते हुए सिक्किम के राज्यपाल महामहिम भ्राता बाल्मिकी प्रसाद सिंह। साथ में पर्यटन मंत्री भ्राता भीम धुंगेल, ब्र.कु. सेफाली बहन तथा अन्य।